ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता

फरवरी 2026 / वर्ष 10 अंक 11

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group

Shri Ram
Associates

बुकिंग मात्र
11000 में
पक्की रजि० दाखिल खारिज के साथ

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS | FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS
Network Services

Service
AMC

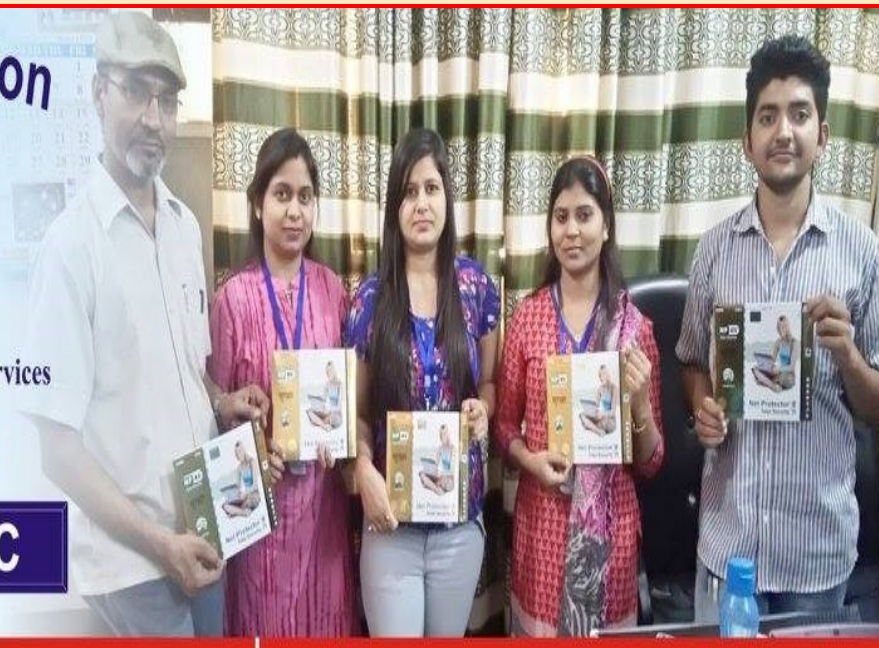

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक
रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
विनोद यादव, गाजियाबाद

प्रकाशक आ संपादक
जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक
डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक
केशव मोहन पाण्डेय (दिल्ली)

सहायक सम्पादक
डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)
प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

सलाहकार सम्पादक
मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
सौरभ पाण्डेय,भोपाल (म0प्र0)
दिनेश पाण्डेय, पटना
डॉ जयंत शुक्ला, इंदौर (म0प्र0)

तकनीकी एडिटिंग-कम्पोजिंग
सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र (कवर पेज)सहयोग
केशव मोहन पाण्डेय –**नई दिल्ली**

प्रतिनिधि
आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्य गण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),

डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना, डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦
HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

संपादकीय

जेकर खइलन रोटी ओकरे धइलन बेटी
–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5

आलेख/शोध लेख/निबंध

देशी माटी के दीया–अंकुश्री/6–7
बिहारी मजदूर : एगो कविता एगो व्याख्या –
डॉ विष्णुदेव तिवारी /29–30
नई शिक्षा नीति 2020 में क्षेत्रीय भोजपुरी के
प्रासंगिकता–डॉ संतोष पटेल/31–32
एक मुठी सरसो बनाम भोजपुरिया
– केशव मोहन पाण्डेय/33–35

कविता/गीत/गजल

माई के हँसी–डॉ राम बचन यादव /8
का हाल बा–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /8
दू गो कविता –सोनी पाण्डेय/12
दू गो गीत – अवेद्य आलोक/13
आस में बसंत–हरिओम हंसराज /16
माफ करीं दशरथ के रघुराई –विवेक त्रिपाठ/16
घउरा – उदय शंकर प्रसाद /17
आठवीं अनुसूची से– राम सागर सिंह /17
दू गो कविता–गणेश नाथ तिवारी 'विनायक'/18
जरूर कवनों बात बा– डॉ हरेश्वर राय /18
गीत–उमेश चौबे 'अश्क'/19
गजल–अभियंता सौरभ कुमार /19
पेंड़ के बचाईं–डॉ सुनील कुमार उपाध्याय /20
हम पतझड़ लतियावल जाईं –मार्कन्डेय शारदेय/20
हम लड़त हईं .....अउर लड़ब–
डॉ आनंद कुमार राय/21
समय के सापेक्षताः ककुदमी से आइंस्टीन तक
–शशि रंजन मिश्र/22–23
गजल – अनिल ओझा नीरद /28
परिवार – मनोज कौशल/28
नोकरिया जे न करावे– रत्नेश चंचल /37
पइचा प पानी – सन्नी भारद्वाज /37
हँसे के बहाना ना मिलल– देवेन्द्र कुमार राय/41
दू गो किसान कविता – कनक किशोर /42

समीक्षा/पुस्तक चर्चा

प्राज्ञ दिनेश गुप्ता के मुक्तक कृति
–राम प्रसाद साह /24–25
'धधकत सुरूज पियासल धरती' ईको पोएट्री आ
ईको कृटिसीज्म के एगो नया आयाम
–डॉ संतोष पटेल/25–26
एगो सुघर आ रसात्मक आलोचकीय कृति
–मीनाधर पाठक /27

कहानी /लघुकथा/रम्य रचना

पुरनका कहानी : नवही मनमानी –कौशल
मुहब्बतपुरी /9–11
पकडुआ– सविता गुप्ता/14
मिटत कुहेसा–सुरेन्द्र प्रसाद गिरि /14
आपन–आपन आदत –सारिका भूषण /15
एगो पाती–गीता चौबे गूँज/15
निशान –डॉ रेनू यादव /43–45

एकाँकी

पिंजरा के पंक्षी– विद्या शंकर विद्यार्थी /36

संस्मरण

हमार राम भंजन बाबा – जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
/38–41

बिसनाथ दुअरिया बइठ के

के ह बीखुआ ?– डॉ सुमन सिंह /45–46

■■

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

जेकर खइलन रोटी ओकरे धइलन बेटी

समय लोगन का संगे साँप–सीढ़ी के खेल हर काल–खंड में खेलले बा,अजुवो खेल रहल बा। चाल–चरित्र–चेहरा के बात करे वाला लोग होखें भा सेकुलर भा खाली एक के हक–हूकूक मार के दोसरा के तोस देवे वाला लो होखे,समय के चकरी के दूनों पाट का बीचे फंसिये जाला। एहमें कुछो अलगा नइ खे। कुरसी मनई के आँखि पर मोटगर परदा टाँग देले, बोल आ चाल दूनों बदल देले। नाही त जेकरा लगे ठीक–ठाक मनई उनुका कुरसी रहते ना चहुंप पावेला, कुरसी जाते खीस निपोरले उहे दुअरे–दुअरे सभे से मिले ला डोलत देखा जाला। ई साँच जनला का बादो लो चेतबे ना करत। भा इहो कहल जा सकत बा कि समय अइसन लोगन के चेते ना देला। कबीर बाबा ई बाति बहुते पहिले बता देले रहें बाकि ओकर अरथ अभियो लोगिन के बुझाइल कि ना, समझ के परे बा। हम चाहतानी कि कबीर बाबा के बाति रउवो सभे एक बेर फेर से पढ़ीं, सुनी आ गुनी–––––

'चलती चक्की देख के , दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय॥'

एह देस में धरम आ अध्यात्म के अनगिन सोता फूटल आ बहल, समय का संगे आपुसो में मिलल आ फेर एह समाज के महासमुंदर में समा गइल। ई एगो पक्ष रहल, दोसरका पक्ष इहो बाकि ओही समय में एगो धरम के लो दोसरा के मेटावे खाति कुल्हि उधातम कइल, मेटा ना पवलस आ खुदे बिला गइल। कतने राज आ राजा लो अइने, आपन राज फइलवलें, आपन आपन धरम जबरियो फइलवलें, बाकि उहो लो दोसरा धरम के खतम ना क पवलें, खुदे बिला गइलें। इहे खेला अजुवो चल रहल बा। कुछ लो अजुवो अइसन बा जे दोसरा मानसिक,सामाजिक अउर धार्मिक हानि पहुंचावे ला कुल्हि उधातम क रहल बा। उहो लो के हाल उहे होखी, जवन उनुका पहिले वाला लोगन के भइल रहे बाकि लो बूझल नइखी चाहत भा उहाँ सभे के बुझाते नइखे। एह कुल्हि करतूतन से देस, समाज आ साहित्य सभे प्रभावित होला, अजुवो हो रहल बा। बाकि आजु के नीति नियंता लो के हाल 'आन्हर गुरु, बहिर चेला' वाला भइल बुझाता। तबे नु एह घरी उहे लोग एक्ट–एक्ट के खेला खेल रहल बा आ लोगन के आपुसे में लड़वावे के उधातम क देले बा। भला होखो बड़का कोरट के जवन आन्हर भइल लोगन के आँख खोल के देखे आ सोचे ला मजबूर कइलस। कुछ लोग इहो देखिके दाँत देखा रहल बा आ खिसियानी हँसी हँस रहल बा। ओह में से कुछ लोग नेही लोगन के गारी के महसूस क रहल बा। ई लोग त साँचो जेकर खइलन रोटी ओकरे धइलन बेटी वाली कहाउत चरितार्थ कर रहल बा।

कुछ लो कबों देस आ समाज के सनमान न करे खाति जामेला। अइसन लोगवा एहू घरी बा आ ढेर बा। आजाद देस में कब के आजादी माँगे लागता आ केहुके ई देस आजाद बा कि ना, पते नइखे। ढेर लो मिलके कबर खोने में लागल बा। कवनों कबर खोनला पर का भेंटाला, ई सभे मालूम बा। तबो लो खोने में जुटल बा। कुछ लो पाप नाशिनी गंगा के आशीष के सगरे ठेका उठा के बइठल बा आ लोगिन के जलाभिसेक करवा के पवित्तर करि रहल बा तबे नु काल्हु तक ले जे बाउर रहल भा अश्लील रहल, उहो लो अब नीमन हो गइल सुने में त इहो आवता कि संगे अवते आधा पाप असहीं बिला जाला। अब ओह लोगन का संगे मिल के सबकुछ हो रहल बा। इहे हाल साहित्य के लेके हो चुकल बा।

भोजपुरी साहित्य सरिता परिवार आपन लय बनवले साहित्य के बढ़न्ति में जतना संभव बा करे के परयास में लागल बा। यति गति के आपन रंग होला, आपन पौरुष होला, आपन वितान होला, ओहु से सभे परभावित हो जाला, त हमनिए के कइसे बाचब। तबो परयास बा कि कुछ नीमन होखे, एही सोच का संगे पत्रिका के ई अंक रउरा सभे के सोझा परोसा रहल बा। जय भोजपुरी !!

■■

रउरा सभे के आपन––

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
सम्पादक

देशी माटी के दीया

अंकुश्री

दिवाली मतलब दीया के त्योहार। दिवाली के दिन अतना दीया जरावल जाला कि चहूं ओर चकमक–जगमग हो जाला। घ ार के भीतर त रोज दीया जलेला, दिवाली के दिन घर के बाहरो दीया के कतार सज जाला। लोग अपना घर के अलावे आपन काम के स्थान, कारखाना, दुकान, सब जगह दीया जलावेलन। चारों तरफ दीया के सजल कतार देख के मन खुश हो जाला।

दीया दिवाली में सजबे करेला, दोसरो कुछ मवका पर दीया जरावल जाला। घर–मंदिर में साँझ के बेरा तकरीबन हर दिन दीया जरावल जाला। बहुत जगह साँझ के बेरा नदी किनारे आरती के बाद दीया बहावल जाला। कवनो–कवनो मवका पर त दीया के प्रवाह से नदी में आउर किनारे पर प्रकाशे–प्रकाश देखाई देवे लागेला। उहवाँ के दृश्य देखनीहार के मन–मस्तिष्क में यादगार बन जाला। पत्ता के दोना पर दीया र खके नदी में बहावल जाला, जे बह के दूर–दूर तक फइल जाला।

सूरज प्रकाश के महान् स्रोत हवन आ दीया प्रकाश के एगो नन्हा–सा जरिया। एही से दीया के सूरज के अंश मानल जाला। दीया खाली माटिये का ना होखेला, बलुक दोसरो तरह के होखला। पीतल, चाँदी, सोना जइसन धातुअनो से दीया बनेला आउर प्रयोग में आवेला। दीया तांबो के बनेला आउर लोहो के। पत्थर आउर सीपो में तेल–घी डाल के दीया जरावल जाला। बाकिर माटी आउर पीतल के दीया के प्रचलन जादे बा। दीया के आकारो–प्रकार तरह–तरह के होखेला। ई कए तरह के सजावटी रूप आउर छोट–बड़ आकार में बनावल जाला। दीया के तरह–तरह के स्तंभो बनावल जाला। मंदिर परिसर में अइसन स्तंभ अबहियों देखल जा सकेला। दीया जरावे खातिर ओह में कए तरह के तेल डालल जाला। आदिम मानव चट्टान आउर पत्थल में गहिरा खोद के ओह में दीया जलावत रहस। ऊ लोग तेल के जगह जानवर के चरबी के उपयोग करत रहस। अभी दीया में सरसो तेल, तिल तेल, अलसी (तीसी) तेल, अरंडी (रेंड़) तेल, करंज (कहुआ) तेल, महुआ तेल आदि के अलावा घी के भी प्रयोग कइल जाला। दीया में सरसो तेल, तिल

दिवाली में दीया भले साँझ के बेरा जरेला, बाकिर ओकर तइयारी कुछ दिन पहिलहीं से होखे लागेला। दिवाली के विशेष तइयारी घर–बाहर के सफाई ह। एह मवका पर सावन–भादो में उग आइल घास, फालतू झाड़ी, मकड़ा के जाल आदि के कटाई–सफाई होखबे करेला, घर–दरवाजा के लिपाई–पोताइयो कइल जाला। सर–सफाई से कीट–फतींगा खतम हो जाला। जवन सूक्ष्म जीव आउर कुछ फतींगा बच जाला, ऊ दीया के रोशनी से खिंचा के आवेला आउर तेल में गिरके मर जाला। एकर मतलब बा कि दिवाली में खाली रोशनी फइलावे खातिर ना, बलुक कीट–फतींगन से मुक्तियो खातिर दीया जरावल जाला।

दिवाली के रात में आतिशबाजी होखेला। रात काहे, साँझे से आतिसबाजी होखे लागेला। ई बात अलग बा कि कुछ लोग दू–चार दिन पहिलहीं से आतिसबाजी शुरू कर देवेलन। पटाखा आउर फुलझड़ी के अवाज, ओकर चकाचौंध आउर धुआं से कइएक तरह के सूक्ष्म कीट मर जाला। एहसे दिवाली के बाद हमनी के रोजाना के जिनिगी में ओह कीट–फतींगन के आतंक के प्रभाव कम हो जाला। पर्व–त्योहार के संस्कृति परंपरागत रूपे में फलित–फूलित होखेला। जरूरत बा ओकरा के पारंपरिक ढ़ंग से मनाके ओकर पूरा–पूरा लाभ लेवे के। बाकिर आधुनिकता के नांव पर परंपरा में जवन तरह से बिकृति आइल बा आ अबहियों आ रहल बा, ओकरा से पर्व–त्योहार के मौलिक अवधारणा धीर – धीरे खतम होत जा रहल बा। आधुनिकीकरण आदमी आउर व्यवस्था खातिर नीमन बात बा। बाकिर संस्कृति के आधुनिकीकरण बहुते असंगत लागेला। एकरा के कबहूं उचित नइखे ठहरावल जा सकत। संस्कृति के मूल रूपे में आनन्द आवेला, सांके. तिक रूप में ना।

तेल के दीया से दिवाली के सजावट हमनी के रिवाज ह। बाकिर अब दिवाली के दीया से अंजोर करे के रेवाज खतम चाहे कम होत जात बा। दिवाली के रोशनी त बांचल बा, बाकिर तेल आउर घी के दीया धीरे–धीरे विलुप्त होत ता रहल बा। दीया के जगह पहिले त बिजली के लट्टुअन के रेवाज शुरू भइल आ बाद में लट्टुओ हट के बिजली के लरी आ गइल। लरी के परंपरा अइसन बढ़ल कि घरे–घर इहे देखाई देवे लागल। नगर आउर महानगर के बारे में

से दिवाली मनावल जा रहल बा। गाँव के पक्का मकानन के का कहे के, उहवाँ त बिजली से चकाचौंध हो जाला। दिवाली के कुछ दिन पहिलहीं से बिजली के लरी से चारों तरफ रोशनी आउर सजावट के जइसे होड़ लाग गइल बा। लरिअन के लोकप्रियता अइसन बढ़ल बा कि दोसरा देश से आइल सस्ता लरिअन से दिवाली के महीना भर पहिलहीं देश के पूरा बाजार सज जात बा।

बिदेश से खाली बिजली के लरिये नइखे आवत, माटी के दीयो बिदेशे से आ रहल बा। बिदेशी दीया के जादे लोकप्रिय भइला के पाछे खास कारण बा ओकर कम कीमत आउर जादे सजावटी होखल। माटी के बिदेशी दीया जवना तेज गति से शहर से लेके गाँव तकले आपन बाजार फइला लेता, हमार देशी उत्पाद ओह गति आउर सुलभता से गाँव से चल के शहर तक नइखे पहुँच पावत। एकरा पाछे एगो बड़हन कारण बिदेशी सामान के उपयोग कइल लोग आपन शान समझत बाड़न। बिजली की बिदेशी लरी आउर बिदेशी दीये ना, फुलझड़ी आउर पटाखो के बिदेशी बाजार हमनी किहवाँ बहुत जोर पकड़ लेले बा। बिदेशी सामान से लोगन के लगाव के एगो बड़हन कारण देखादेखियो बा। परिवार–समाज में एक आदमी जे करेला दोसरो लोग ओकर अनुकरण करने लागेलन। ई आदत बहुत घातक बा। ई खाली परिवार आउर समाजे खातिर घातक नइखे, बलुक राष्ट्रविरोधियो बा। रो. जाना के जिनगी होखे चाहे सलाना भा दोसर आयोजन, राष्ट्रहित के धेयान हमेशा रखे के चाहीं।

देश में बिदेशी माल के खपत बढ़ला से हमनी के परंपरा आउर संस्कृति के मूल अवधारणा के नाश शुरू हो गइल बा। एकरा से गाँव के अर्थ–व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित भइल बा। हमनी के ई बात कबहीं ना भुलाए के चाहीं कि पर्व–त्योहार संपन्न लोगन खातिर खुशहाली ह त गरीब किसानन आउर मजदूरन खातिर आर्थिक संबलो ह। दिवालिए ना, हर पर्व–त्योहार के साथे सामाजार्थिक बेवस्था गहराई से जुड़ल रहेला। खेती–फसल, हाट–बाजार, मर–मजदूरी सब पर्व–त्योहार से जुड़ल बा। बाकिर देश में बिदेशी बाजार के बढ गइला से छोट किसान, कारीगर, कलाकार, मजदूर जइसन लोगन के मनोबल टूटे लागल बा। हालत ई बा कि नएका पीढ़ी आपन परिवार के पारंपरिक पेशा छोड़ देले बा आ पढ़–लिख के बेरोजगार हो गइल बा। अइसने लोग के कारण बेरोजगारन के पँक्ति रोज बढ़त जा रहल बा।

सवाल एगो दीया चाहे लरी आउर पटाखा चाहे फुलझड़ी के नइखे। सवाल बा बिदेशी बाजार के देश में घुस के इहवाँ के अर्थ–व्यवस्था के लचर बना देवल। हमनी के आज जवन पद पर चाहे जवन गरिमा में जी रहल बानी, हमनी के बाद के पीढ़ी ओकरा से नीचे मत चल जाओ। एहसे ई बहुत जरूरी बा कि बिदेशी सामान के उपयोग कम से कम कइल जाओ चाहे मत कइल जाओ। इकाइयें से ही दहाईं आउर आगे सैकड़ा बनेला। एहसे हर आदमी के निजी प्रयास कवनो बड़ काम के शुरूआत खातिर काफी बा। एह बात पर अमल कइल बहुत जरूरी बा। एकरा के एही साल के पर्व–त्योहार से लागू कइल जाओ। अबहीं दिवाली के त्योहार हमनी के सामने बा। देखे के बा कि एह दिवाली में देशी माटी हमनीं के केतना खुशबू देत बा आउर ओकरा दमक से केतना रोशनी निकलत बा। बिदेशी बाजार के हवा के झकोर से अपना देशी दीया को बुझए से बचावल हर आदमी के परम कर्तव्य बा।

❑❑

❍ 8, प्रेस कालोनी, सिदरौल,
नामकुम, राँची (झारखंड)–834 010
मो0 62049 46844

माई के हँसी

डॉ राम बचन यादव

माई जब हँसेले त
हँसले कली
गाँव के गली
हँसेलन फूल
खेत–खलिहान, बयार अ बगइचा
प्रकृति हँसेले!

माई जब हँसेले त
हँसेला बिसबास
जीवन के उजास
हँसेलन सपना
भाव–बिचार, नेह अ आस
भाषा हँसेले!

माई जब हँसेले
हँसेला सागर
ममतामई गागर
हँसेलन बादल
पहाड़, जंगल, नदी अ झरना
धरती हँसेले!

माई जब हँसेले त
हँसेला तारा
नदी के किनारा
हँसेलन कण–कण
चांद, सूरज, ग्रह अ नखत
ब्रह्मांड हँसेला!

❑❑

❍ आदित्य नारायण राजकीय
इंटर कॉलेज, चकिया–चंदौली

का हाल बा

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

घूमत रहलें गल्ली–गल्ली
देखत कहवाँ ऊंच–खाल बा।
पूछलें रामचरितर उनुसे
का हो मुखिया ! का हाल बा।

कवन नवकी घोषना भइल/कतना फंड बा आइल
रउरा घरे मुखियाइन त /रहनी खूबै धधाइल।
हमनी के ना कुछौ मयस्सर
रउरा धइले खूब ताल बा।
का हो मुखिया ! का हाल बा।

पर शौचालय बन्हल कमीसन/मनरेगा बा लमहर मीसन
एह घरी चलत बा जमके/पूजा घर के उद्धारी सीजन ।
देवी देवतन के कामो में
रउरा छनत खूब माल बा।
का हो मुखिया ! का हाल बा।

पानी के सपलाई खातिर/ओहमें जुटलें ढेरे सातिर
सड़को के कहाँ बकसला /मोका आवे वाला बा फिर ।
कवने हित के कहाँ नेवतबा
अबरी कवनो नई चाल बा।
का हो मुखिया ! का हाल बा।

कोटा पर चला के सोंटा/दमड़ी बनवला खूबे मोटा
एक्कै घर में कई गो कारड/मजलूमन के गर के घोटा
तिगड़म सही जोगड़ले हउवा
सगरों गलत तहरे दाल बा।
का हो मुखिया! का हाल बा।।

कहाँ लगावे मालिक पहरा/खूब विकास भइल बा तहरा
गँव के मनई रेता फाँकत/टपने मोटरकार में टहरा ।
स्रकारी माल पचावे ला
तहरा लग्गे फिट्ट जाल बा।
का हो मुखिया ! का हाल बा।

पट्टा कइला चिह्न चिह्न के/माल दबवला गिन गिन के
बिरधा पेंशन खुबै डकरला /दुखी बनवला दीन हीन के।
जहिया बइठी जॉच साँच के
सोचिहा जेपी के कमाल बा।
का हो मुखिया ! का हाल बा।

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

पुरनका कहानी: नवहीं मनमानी

कौशल मुहब्बतपुरी 'कौशल'

पुरनका कहानी

पुरान कथा त इहे बा कि कछुआ आ खरहा दूनू दोस्त लोग रहे।खरहा के अपना तेज दउड़ लगावे के ताकत पर बहुत घमंड रहे। बहुत तंग हो के कछुआ एक दिन खरहा से दउड़ के चुनौती मान गइल। दउड़ शुरू भइल। खरहा बड़ी तेजी से बहुत आगे निकल गइल।पीछे मुड़ के देखल त कछुआ बहुत पीछे लउकल।खरहा सोचल कि कछुआ आवस तब ले कुछ आराम कर लिहल जाव।खरहा आराम करे लागल त ओकरा नींन आ गइल। तब ले कछुआ चुपचाप आगे निकल के दउड़ जीत गइल। नींन टूटला पर खरहा तेजी से भाग के पहुँचल बाकिर आपन हार देख के लजा गइल।एह कथा से एगो कहाउतो बन गइल कि धीमा बाकिर लगातार काम करे वाला जीत जालन आऊर तेजी पर घमंड करे वाला हार जालन।

× × × × ×

नवका मनमानी

जीतल कछुआ आ हारल खरहा का एक दिन भेंट हो गइल। खरहा त पहिलही से लजाइल रहे।ऊ कह बइठल कि ए दोस्त कछुआ जी, तू हमरा के हरा त दिहलऽ बाकिर तहरा जीत गइला से कइगो समस्या खड़ा हो गइल बा।पहिल त ई कि दोस्त के काम केहु के धोखा दिहल ना हऽ।तहरा हमरा के जगावे चाहत रहे। हम त तहार दोस्ती देखिये के नूँ सूतल रहनीं। बाकिर तू तऽ चालाकी दिखइलऽ आ हमरा के नीचा दिखावे खातिर चुपे–चुपे भाग गइलऽ।बतावऽ कि ई धोखा ना ह त का हऽ?

ई बतिया सुन के कछुआ कह उठल कि हमरा ई बुझात रहल हऽ कि हमार जीत तहरा ना पची। एही से हमरा के घेर के तू रूआब झारऽ तारऽ।हमरा के बेईमान आ दगाबाज कहऽ तारऽ। देखऽ ई तहार दोस्ती हमरा से कइसे?हम जल के जीव। हवाखोरी खातिर आइल करीले धरती पर।तहरा भेंट भइल तब त तू तेज दउड़ के दिखइलऽ कि ना? एही से हमार जीत के जश्न में सब जल के जीव लोग मना करत रहे कि अब धरती पर ना जइहऽ ना त धरती के जीव लोग तरहा के मरवा देवे के कोशिश करी। तू अब हमरा के जाए दऽ।हो सकत बा कि तूही धोखा रचत होखऽ आ हमार जान ले के बदला लऽ?

खरहा सुन के सन्न रह गइल। ओकरा त ई अचरज होत रहे कि सफल होते केहु कइसे बदल जाला। ओकरा लागल कि हमार हार के बाद धरती के सबे जीव लोग शोक मनावे जुटल रहे तब आदमी लोग काहे कहत रहे कि ई त दूगो अलग–अलग तरह के बसेरा के बीच के जीव लोग के बीच के आन्तरिक लड़ाई के स्पर्धा बा।तू खरगोश हो के धरती पर बसे वाला जीव लोग के जल में जिए वाला लोग से हार के नीमन काम ना कइलऽ।तहरा के एक माह के समय दिहल जात बा कि तू कछुआ के हरा दऽ ना त हमनी आदमी लोग कछुआ मार के खइबे करब, तहरो के मार के खा जाइब। हम ना जितेम त नया जनसंहार के रचना रचा जाई। खरहा जोर से कछुआ के कहलक कि सुनऽ, दोस्ती जब दुश्मनी में बदलेला त दुनु ओरिया बहुते क्षति होले। तू हमार बात मानऽ आ चुपचाप कल्याण खातिर हार जा ना त दोस्ती त खतरा में आइये गइल बा, अब जानो खतरे में बूझऽ।

कछुआ सोचल कि एह जीत के बदौलत ऊ जल के बड़हन जीव के बीच पुजात बा।ई नाटको कर के हारल जाई त सब जल के जीव स जुट के हमार का हाल करी से दइबे जानस। ऊ खरहा से कहल कि देखऽ भाई, दोस्ती–हितैषी आपन जगही बा। आपन जाति–प्रजाति के मान–सम्मान आपन जगही बा।कल्याण एही में बा कि तहरा शांति से आपन उमिर गुजारे के बा त गुजारऽ ना त से ना होखे कि महायुद्ध हो जाए तहार समूचे प्रजाति पर खतरा आ जाए। ई कह के ऊ गवें–गवें आपन घर ओरिया डेग बढ़ावे लागल।

खरहा सोचे लागल कि अब कछुआ का भीतरे–भीतर अहंकार हो गइल बा।हमरो त अहंकारे नूँ भइल रहे कि हम रहता में सूत गइला के कारण हार गइनीं। कइसे मटक–मटक के चलल जात बा आ हमार मन भर बेइज्जती कर रहल बा।हमरा बात के ऊ इज्जत ना कइल हऽ त ओकरा भोगे के पड़ी। देखऽ कुछ त करहीं के पड़ी। ओकरा इयाद आइल कि अकिल के प्रयोग कर के त हमार बिरादरी शेर

के कुआँ में डूबा दिहलस। ई कछुआ कवन खेत के मूरई हऽ।हम बतावत बानीं।इहे सोचत खरहा भारी मन से घरे लवटे लागल।

खरहा का लागल कि जंगल के राजा शेर के बीच ई बात रखे के चाहीं बाकिर ओकरा ई डर समा गइल कि हारला के बाद से सभे जंगली जीव लोग ओकरा से नाराज बाटे। कहीं ई ना होखे कि शेर गुस्सा में हमला ना कर देवे।ओकरा साँप–छुछुन्नर जइसन परिस्थिति समुझ में आइल। केहु ई ना कहे कि चौबे गइलन छब्बे बने, दुबे बन के अइलन।ओकरा एगो राहता सूझल कि मनई जे ध ारती के असली राजा हऽ, ऊ कहीं समझ लेवे त कवनो बात बन जाई। ओकरा मनई पर भरोसा त कम रहे बाकिर मरता का न करता। बदला लेवे खातिर मनई लोग केतना नीचे गिर जाला ओकरा खूब मालूम रहे। खरहा के जाति के केतना औकात। शिकार होखे का डर से दिन भर छिपला से फुर्सत ना होखे।

ऊ घूमत–घूमत गाँव में घुसल त दे खलक कि बीसन आदमी एके जगहीं बइठ के कवनो बात पर गहीर चर्चा करत रहे लोग। ऊ अचानक बीचे गोल में घुस के कर जोड़ लिहलक। ई देख के कि शिकार अपने–आप हाथ में आ गइल बा, कइगो आदमी ओकरा ओरिया लपकल। ऊ जोर से बचाईं महाराज कहके चिल्लाये लागल। मनई के गोल में से एगो बुजुर्ग मनई सब के रोक के कहल कि शरण में आवल के मारे के ना चाहीं।पहिले पूछऽ कि एकरा कवन दुख पड़ल बा कि ई खुदे इहाँ आ के कर जोड़त बा।तब ऊ दुखी मन से सब बात बतवलस आ कहलक कि जल के सगरे जीव लोग खुशी मनाऽवत बा कि कछुआ के राजा बना के अब धरती पर आके आपन राज कायम करी। हमरा मनवला के आउर आपन दोस्ती के धरम इयादो करइला के ओकरा अहंकार के आगे कछुओ सुनवाई नइखे। कछुआ एतना दगाबाज होखी, हम ना जानत रहनी हऽ। खरहा के बेयान सुन के आदमी लोग अचरज में पड़ गइल। ओह में एगो लमहर मूँछ वाला ताकतवर आदमी कहे लागल कि हती भर के जीव के एतना गुमान। ऊ कहल कि ए खरहा, आजुये बलुक अभिये जा के नदी किनारे चिल्ला के कह दऽ कि सात दिन के भीतरे कछुआ फेर से दउड़ में भाग ले के हार मान लेस ना त सगरे नदी के जीव लोग के महाजाल में फँसा के मार दिहल जाई।खरहा का लागल कि ओकर निशाना सहिये लागल बा।ऊ झट से कहल कि मालिक जइसन राउर आज्ञा आ नदी ओरिया तेजी से चलल।ओकरा लागल जइसे गोर में फेरू से ताकत आ गइल होखे।

एने बुजुर्ग आदमी कहे लगलन कि ए मुच्छड़,तू ई कवन नया धंधा शुरू कर दिहलऽ। जल के जीव से खरहा का लंद–फंद बा।एह में हमनी के का लेवे–देवे के बा? मुच्छड़ मुसकात कहल कि काका,कछुआ खइला बहुते दिन हो गइल बा।एही बहाने भोज होई,खरहवो के आ कछुओ के। एह जीव लोग के मनई से ठीक से भेंट नइखे भइल। राज हमनी के,अकिल हमनी का,लड़ाई लड़ी जल आ जंगल के जीव।ई सुनते सब लोग ठहक्का मार के हँसे लागल। बुजुर्ग कह उठलन कि हम त मुच्छड़ के मोट दिमाग वाला पहलवाने बुझत रहनी हऽ।एकरा त ढेर अकिल बा।ओने मुच्छड़ सोचत रहे कि एह भोज के बाद ऊ सरदारी बुजुर्ग से छीन लिही।

ई खबर जंगल आउर जल में आग जइसन फइल गइल कि एह इतवार के कछुआ आ खरहा में दउड़ नदी के किछार पर होई।कछुआ दउड़ में भाग लेवे खातिर ना अइहें त जंगल के जीव लोग जल पर आक्रमण करी आ जल के जीव लोग के भारी क्षति उठावे के पड़ी।ई खबर सुन के जल के जीव लोग में भारी अचरज के साथे भय व्याप्त हो गइल। जल के में एगो बुजुर्ग मगरमच्छ का ई जल्दिए समझ में आ गइल कि कुछ ना कुछ अनहोनी हो के रही। ऊ जल में मचल खलबली के बीच में बोल उठल कि जरूर कछुआ महाराज कुछ आपन अहंकार भा चतुराई दिखवले होइहें जेकर ई गहीर परिणाम बा। अब जल में जिनगी खतरा में बा। जा के चुपचाप ई खरहा से अकेले हार आवस आउर सब जल के जीव के जान बचावस। मगरमच्छ ई खबर से जेतना तनाव में रहे ओतने मने–मन खुश रहे कि अतेक दिन से ऊ आदमी के बीच आ–जा के आपन अक्किल से घड़ियाली लोर बहा के मरल आदमी के बहुत लाश से मीठ करेजा खा–खा के जिनगी के आनंद लिहत रहल हऽ।बाकिर जिंदा आदमी के माँस खइला ढेर दिन हो गइल बा।ई जेकरा चार डेग चले में अतेक समय लागेला ऊ बाघ–चीता के दउड़ में ना धराये वाला खरगोश के धोखा से हरा पूजात रहल बाड़न। मगरमच्छ के ईर्ष्या ओकरा के प्रेरित कइलस कि इहे मौका बा जे एगो लमहर कांड करा के कुछ जीभ सोवाद लिहल जाव। ओकरा ई समुझ में आ गइल कि एही लड़ाई में कुछेक अनझटका में जंगल के जीव के मांस तिरा जाये चाहे जल के निमन जीव के मांस मिल जाए त निमने रही। शोर–शराबा आ हो–हल्ला

में केने का होत बा बुझइबो ना करी आ बहुत पुरान बदला सब ले लिहल जाई जइसे आदमी लोग फगुआ के दिन के बदला भंजावे खातिर इस्तेमाल करेलन सबे। इहे समुझ के ऊ एगो भड़काऊ बात कहल कि सबे दिन जंगल के जीव लोग के जल के जीव के जीत ना सोहाला। सभे मिल के चलऽ आ आपन–आपन ताकत बतावत कछुआ महाराज के जितावऽ। यदि जंगल के जीव लोग षड्यंत्र रची त हमनी हमला कर के आपन शक्ति दिखावल जाई। एक दर्जन शेर के त हम असहीं पछाड़ दिह. ब।इयाद बा नूँ जब हम हाथी के टाँग पकड़ लिहनीं तब हुनका भगवान बुलावे के पड़ल रहे। चिंता मत करऽ लोगे हमरा में अभियो बहुत कुछ बा आ सबसे जादे हिम्मत बा।ई सुन के सबे जल के जीव लोग हो–हो करके कछुआ के हिम्मत बढ़ावे लागल आ कह उठल कि चलऽ ओह दिन जे होई से देखल जाई। ई सब देख–सुन के मगरमच्छ कनखी से सब के निहारत आपन षड्यंत्र पर बिचार करे लाग. ल।

इतवार के दिनवा भोरहीं से जल आ जंगल के जीव नहा–धो के निमन पोशाक में तैयार हो के नदी किछारे बरगद के पेड़ के पास इकट्ठा होखे लागल लोग। जंगल के सब जीव लोग एगो पांति में कोस भर में फइलल रहे।जोर–जोर से जंगल के जीव के जयकार मनावत रहे।ओने करिया जल के जीव लोग नदी कछार पर आ के धरती पर मुँह सटा के तमाशा देखे खातिर बेचैन हो गइल। जल के नीमन जीव लोग जल में ऊँचाई तक कूद–कूद के जल के जीव लोग के हिम्मत बढ़ावत शोर मचावत रहे।ठीक दुपहर में खरगोश आगु आ के कछुआ के ललकारत कहल कि कहवाँ लुकाइल बाड़ऽ ऐ धोखेबाज। बाहर निकल के आवऽ, चलऽ दउड़ के फरिआ लिहल जाव। ललकार आ दगाबाज शब्द सुन के कछुआ का बर्दाश्त ना भइल आ ऊ हाथ–गोड़ पटकत बाहर निकल के आइल आ कह उठल कि आगु एको शब्द अनाप–शनाप बकलऽ त ठीक ना होई । तहरा में हुबा होखे त चलऽ दउड़ शुरू करऽ। दूनू एक–दूसर के आमने–सामने आ गइल । दूनू के आँख एक–दूसर से मिलल। दूनू एक–दूसर के ताकत आ मिजाज के आँके लागल। दूनू हाथ मिलावे खातिर आगु बढ़े चाहल। ठीक एही समय मुच्छड़ आदमी बुजुर्ग आदमी के देखल आ कहल कि काका कि ई ओतहर बड़हन रोहू मछरी के ई उछाल हमरा बर्दाश्त नइखे होत।का कहत बाड़ऽ? बुजुर्ग कहल कि हमरो रोहू–नैनी मछरी के सोवाद से मुँह में पानी आ रहल बा।नेक काम में देर कवन बात के।बता द कि आदमी के जात का होले।

एतना सुनते मुच्छड़ हो–हो कर के जल के जीव पर हमला कइलस कि सबे जंगल के जीव लोग जइसे शेर–भालू–चीता–बाघ–गीदर लोग जल पर आक्रमण कर दिहलस।ओने मगरमच्छो एही ताक में रहे आउर आपन निशाना बाघ पर लगा के उछल. ल।दूनू ओर से भारी अफरा–तफरी मच गइल। जेकरा जे पकड़ाइल ऊ ओकरे शिकार कइलस। जान–माल के भारी क्षति होखे लागल। एह बीच कछुआ आ खरगोश एक–दूसर के देखल आ एके–साथे कहल कि ई पूरा दुनिया के जीव सब धोखेबाज बा। ऊ जमाना अब नइखे जे शांति से लोग हमनी के दउड़ देखी आ फैसला करीं। चलऽ भागऽ आपन–आपन जान बचावऽ।दूनू दोस्त एक–दूसर के गले लागल आ भाग खड़ा भइल। भारी क्षति त हर लड़ाई के परिणाम होबे करेला।आ एहू खिस्सा के अंत ''खिस्सा गइल वन में सोचऽ आपन मन में ''से भइल।

❑❑

❍ **मुहब्बतपुर, मुजफ्फरपुर**
बिहार–843120

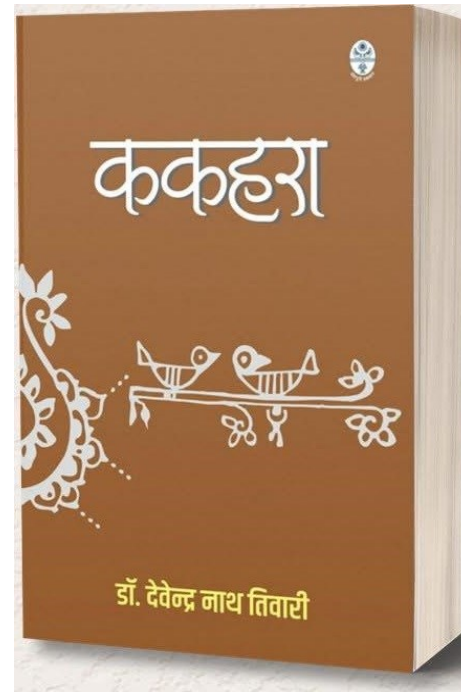

दू गो कविता

सोनी पाण्डेय

चिरई

भोर चिरई की आँख क पानी
उ झारे ले भोरे अपनी पाख से दुःख
उड़े ले भरि अकास
लउटे ले तनी सा दाना ले चोंच मं
सृष्टि के श्रमशील नागरिक ह चिरई
एसे जाने ले
रात दुःख के बिछौना बा
दिन हवे आँख क पानी
जब गिरे ला आँख से पानी
हारे ले मनुजता
जब सूखे ला पोखरा क पानी
हारे ला मनई
चिरई एहि से बचावेले तिनका–तिनका जोड़ि के जीवन
जबले बचल बा चिरई
बचल बा आदमी
अउर आज आदमी बा कि लागल बा उजारे में
पानी, जंगल, अउर जमीन
जब इहे ना रही त कइसे बची चिरई
कइसे बची आदमी।

❑❑

इहाँ हर घरी कुछ छूटत बा

इहाँ हर घरी कुछ न कुछ छूटत बा
आँख से सपना, नींद, रंग
भाखा से छूटत बा प्रेम
जिनगी से पानी
अपना लोग से भरोसा

छूटत बा नदी के साथ
हाथ से हाथ
समुन्दर से गहराई
पहाड़ से ऊँचाई

छूटत बा पेड़न से साथ
कालिहि बिटिया हमसे पूछलज
माई! इ चिरई कहवां घर बनाई
सुनते सरक गइ
ल हमरी हाथ से बालू लेखा पहर
ओकर सवाल लटक गइल
ब्रह्मांड के लिलाट पर
आप सभे के लग्गे
ओकरी सवाल क जवाब होखे त बताईं।

❑❑

❍ आजमगढ, उत्तर प्रदेश

दू गो गीत

अवेद्य आलोक

उ गंउवा हमार हऽ

जहवाँ पे उठे ला गंगा के धार हऽ
उ गंउवा हमार हऽ– 2
चारो ओरी गेहुँआ के खेतवा लगल बा
बीच बीच में सरसो के फूलवा खिलल बा
ऊखवा के खेतवा में रखवाली होला
छठवां में जे मांगे ओके मिलेला
देखअ बाबुनन के खेतवा में घुसल बा सांड़ हऽ
उ गंउवा हमार हऽ– 2

सुबहे सुबह बाबा गंगा नहाए
मंदिर में लइका सब घंटा बजाए
नीमवा पे सुगवा चांय चांय मचावे
अंगना बहारे भौजी चुडिया खनकावे
जे न जगे ला त समझअ बीमार हऽ
उ गंउवा हमार हऽ– 2

बाबू के बोलिया ना तनिको सोहाला
माई के बोलिया में मिसरी घोलाला
ले जा करेजा खेतवा पर खाना
दिनवा चढ़ल बड़कू पईलें न दाना
भईया पे आपन त सब कुछ कुर्बान हऽ
उ गंउवा हमार हऽ– 2

तनिको भुलाला ना ओकर सुरअतिया
करहियाँ के मेला में ओकर इ बतिया
का कहिंयें लोग ना अइसे तू देखे
तन नाहीं मन से नाता तू जोड़े
त्याग ही त प्रेम के बड़का सिंगार हऽ
उ गंउवा हमार हऽ– 2

पईसा के युग में छूट गइल गंउवा
चनवा के खेतवा औ पीपरा के छंउवा
बन के चिरैयाँ मन उड़ी उड़ी जाला
याद के बीजवा चुनी चुनी खाला
फिर वहीं जनम लीं, इहे विचार हऽ
उ गंउवा हमार हऽ– 2

❑❑

भइल अँजोरऽ

भइल अँजोरऽ
टह टह पियर पियर नेनुवा फूले
भर बिरवइया भंवरा डोले
नाचे सुबह मन मोर
भइल अँजोरऽ
भइल अँजोरऽ

रात भर चाँद के मुंह निहराइल
उगते सूरजवा मुंह पियराइल
हवे ते पिया तू चितचोर
भइल अँजोरऽ
भइल अँजोरऽ

टप टप गिरे ला हरसिंगार
माटी संग फूल मिलल गमके दुवार
रहल केकर पिरितिया पे जोर
भइल अँजोरऽ
भइल अँजोरऽ

सुते द माई नींद बड़ी बा आवत
जागे नाही त तहार बाप बाड़न आवत
कह के माई देले झकझोर
भइल अँजोरऽ
भइल अँजोरऽ

दाना पानी चूँगे जात बानी मइया
तनी घोंसला अगोरिहअ गावे चिरइयाँ
पेट के आग हवे बलजोर
भइल अँजोरऽ
भइल अँजोरऽ

❑❑

यमुना विहार, दिल्ली 110053

पकड़ुआ

सविता गुप्ता

"का हो बबुआ काहे नइखऽ मानत का चाही? नोकरी चाकरियो लाग गइल अब का चाहीं? बड़की मामी घर में घुसते ही रमेश के पीछे पड़ गइली।

रमेश मामी के गोड़ लाग के चुप चाप मोटर साइकिल स्टार्ट कर के फर्रर्र से चल गइलन।

रमेश,तीन बेटी के बाद तेतर बेटा माई बाबू के आँख के तारा साँचों में लायक बेटा रहलन पढ़ लिख के भी शहर के नोकरी छोड़के गाँव के कॉलेज के नोकरी चुनलऽन।

आईं भाभी ,बइठीं रमेश के माई झट से एगो कुर्सी ले आ के देली ।आ अपने नीचे पीढ़ा पर बइठ के बुचिया के इशारा कइली ।बुचिया झट से एक गिलास शरबत आ मुरब्बा ले अइली ।

"खाई मामी माई बनवले बिया ।"

गपागप्प मुरब्बा खाके मामी के चटर पटर चालू रहे।आज मन बना के आइल रहऽली रमेश के जवाब ले के जाइब।

रात के सात बज गइल रमेश घरे ना अइलन तऽ बुचिया माई से कहली कि माई बाबू के जाके बोलऽ ना ! भइया तऽ रोज चार बजे तक आ जात रहलन

मीना देवी भी मने मने चिंतित रहली "हँ रे ,काहे नइखे आइल अभी तक।"

कॉलेज,यार ,नाता , रिस्ता ,टोला,मोहल्ला सब जगह खोज भइल।कुछो अता पता ना लागल।

भोर में रमेश के मोटर साइकिल नहर के पास मिल गइल बाकी रमेश के कहीं अता पता ना मिलऽल । नहर में गोताखोर उतारल गइल।साँझ हो गइल ।घरे रोआ पिटा मचल रहे। थाना पुलिस सब प्रशासन लागल बा।

दू दिन बाद राति खानी एक बजे रमेश के बाबूजी के एगो फोन आइल दूसरा ओरी से रमेश फुसफुसा के बोलत रहलन कि "बाबूजी,हम पकड़ुआ सब के चुगल में फँस गइल बानी।

कॉलेज से आवत बेरा हमरा के जबरन गुंडा सब हाथ मुँह बांध के वैन मे बइठा के भभुआ के एगो गाँव में ले आ के राति खानी एगो लइकी से बंदूक के नोक पर जबरिया बिआह कर दिहऽल गइल बा ई तऽ कहऽ की लइकी समझदार बाड़ी ,चोरा के आपन फोन दिहऽली तऽ फोन करऽतनी लइकी भी अइसन बिआह के खिलाफ बाड़ी एही से हमार मदद करऽ तारी।"

पुलिस रातें में दबिश डाल के रमेश के छोड़ा के घऽरे सही–सलामत पहुँचा देलऽस।लेकिन रमेश के मन में उ लइकी के प्रति एगो सम्मान के भावना जाग गइल रहे। साल भऽर बात – चीत कइला पऽर रमेश उहे लइकी के बैंड बाजा के साथे आपन धर्म पत्नी बनवले ।

❑❑

राँची झारखंड

मिटत कुहेसा

सुरेन्द्र प्रसाद गिरि

दीपक दू बेरिया प्री मेडिकल टेस्ट (नीट,सिइइ) के परीक्षा में असफल भइला से निराश हो गइल रहस। ऊ डाक्टर बनेके एगो बड़हन सपना देखले रहलें। डाक्टरी के कमाई के मजबूत साधन ना समुझ के एगो मानवीय सेवा के सोच बनाके ऊ आजीवन समर्पित हो जाएके विचार कइले रहस।

बाकिर दू–दू बेरिया के असफलता उनका के झकझोर दिहलस। एक दिन ऊ छत पर बइठ के कुछ सोच–विचार करत रहस। सड़क के ओह पार एगो बड़हन पीपर के गाछ पर रंग–विरंग के चिरइन सन शोर, झोंझ मचवले रहे। दीपक सोचे लगलन––ई विशालकाय गाछ के आजू के रुप में आवे खातिर बरिसन लागल होई––आ चिरइअन –– आपन आ बचवन के खोराक के खोजी में सबेरे से सँझिया ले केतना मेहनत कर तारी सन––? हरियर कचनार जइसे पीपर के गाछ केतना आन्ही, तूफान, सरदी आ गरमी झेल के तनल बाटे।–– जिनगी बढ़िया ढंग से जिएला ईश्वर के रचल हरेक परानी केतना उतजोग कर रहल बाड़ी सन––!

दीपक के निराशा के जमीन पर उत्साह के संजीवनी पनपे लागल। ऊ आपन मेडीकल परीक्षा खातिर गंभीर तइयारी के बारे में सोचे लगलन। एकरा लागि पहिले से ज्यादा जरूरी रहे – – ट्यूशन, कोचिंग, पास कइल साथी लोग से समपरक आ विस्तार – –!

दीपक अपना भीतर नयका शक्ति के संचार करे खातिर मने–मने ईश्वर के धन्यवाद देवे लगलन।

❑❑

पिप्राढी – 5 बारा, नेपाल।
ह्वाट्स–977–9811143897

आपन–आपन आदत

सारिका भूषण

"मालिक! तनी मिसरी आ गुड़ मिली का? आज रोटी नइखे खाय के। घर पहुँचे में साँझ हो जाई।" ठेकेदार के जाते काम खातिर आइल ए गो मजदूर घर के मालिक के देखते बोले लागल।

"हाँ हाँ काहे नाही तनी देर रुकऽ! अभी लाव तानी।" मालिक रमेश बाबू ओकर धँसल आँख देखकर बोललन।

दुपहर के भोजन रमेश बाबू के हो गइल रहे। खाय के टेबल पर सब डोंगा खाली रहे। कामवाली से आजे फ्रीज के भी सफाई करवैले रहन ना त कुछो बासी मिल जाइत।

"अब सत्तू घोर के दे देत बानी। ओ. करा के कस के भूख लागल होई।" रमेश बाबू नमक, मिरचाई औ नींबू डालकर एक गिलास सत्तू बनावलन। उनकर हाथ से स्टील के गिलास लेकर उ मजदूर एके सांस में पी गइल।फिर आपन मटमैल गमछा से मुँह हाथ पोछलस। रमेश बाबू एकटक देखत रहन।

"ठीक बा मालिक, चल तानी। कल काम करे बिहाने आ जाइब। रोटी लेके आइब। घरवाली के भगवान बड़ी जल्दी उठा लेले बाड़े। अभी आदत नइखे भइल अकेले रहे के।" भारी जियरा से बोलत उ मजदूर हाथ जोड़ के निकल गइल।

रमेश बाबू के अचानक ध्यान आइल कि सत्तू के डब्बा के ढक्कन उनकर हाथे में बा। उ झटपट रसोई में गइलन अउर ढक्कन लगाकर डब्बा ऊपर शेल्फ में रखे लगलन। उनकर बीवी के हाथ के लिखल शब्द 'बेसन' उहे डब्बा पर देखकर अचानक सन्न हो गइलन।

उनकर सामने दू गो चेहरा नाचे लागल – ए गो बेसन के सत्तू समझकर पिए वाला ऊ गरीब मजदूर आ दूसर चेहरा आपन बीवी के जिनका के भगवान उठा लेले रहन, आ जेकरा बगैर रहे के अभी आदत ना भइल रहल।

❑❑

❍ राँची झारखंड

एगो पाती

गीता चौबे गूँज

प्रिय बबुआ बलात्कारी कुमार,

ब्रह्म बाबा तहरा के नीमन बुद्धि देस!

बाड़ा ब्यग्गर होके ई चिठ्ठी लिखे के परता। रोज टीवी आ अखबार तोहरे कारनामा से रँगाइल रहता। कबो भुलइले टीवी में समाचारवा के चइनल लगइब तऽ का जाने साइत तोहरो ई कुल्ही नीउज लउक जाए। तनिका देर खाती बलात्कारी कुमार के चोला उतार के एगो भाई भा बाप के दिमाग से सोचऽ तब तोहरा बुझाई कि तूँ कइसन कांड कऽ रहल बाड़ऽ। तोहरो जदि मतारी–बाप आ भाई–बहिन होखि तऽ ओकरा कइसन लागी, एह बारे में तनिका बिचार करिहऽ।

हमनी के जानत बानी जा कि तूँ जनमे से अइसन ना रहऽ। तोहार परवरिस भले नीमन ना भइल होखे भा तोहरा कतहूँ से नसा के लत लाग गइल होखी जेह से तूँ नीमन–जबून में फरक कर पावे के जोग ना होइब। बाकी बबुआ! जब तूँ होस में आइल होइबऽ तब तऽ तोहरा बिचार करे चाहीं। तूँ इहे नू सोचत होइबऽ कि केहू पकड़िए ना पाई। भगवान तऽ सभ देखत बाड़न नू? कतना दिन उनकर नजर से बचबऽ? तनिका तऽ परमात्मा से डेरा!

एगो लइकी के जिनगी बरबाद करे में ई कइसन मर्दानगी बा तोहार? तनिका तऽ ओह लइकी के बारे सोच के देखऽ! कहेओला तऽ कह देला कि लइकन के बिगड़े में मतारी–बाप के दोस बा। बाकी हम तोहरा से एगो बात पूछतानी कि कतनो बिगड़इल लइका होखे, ऊ आपना मतारी–बहिन भा बेटी के साथे अइसन काम ना नू करी? तऽ जवन लइकिया के जिनगी खराब करताड़, उहो तऽ केहू के बेटी, बहिन नू हऽ?

का तूँ ई ना समझताड़ऽ कि अइसन काम कइला के बाद तहरा नाम पऽ सभे थूकऽता। तूँहू तऽ आपन मुँह छिपा के एने–ओने लुकाइल चलताड़! एगो सलाह मानऽ३ देह के भूख बरदास ना होखे तऽ बियाह कऽ लऽ। बियाह नाम के संस्था एहि खाती नू बनावल बा? समाज में सिर ऊँचा कऽ के रहे से तोहरा काहे परहेज बा? आपना आत्मा के काहे कलंकित करताड़ऽ?

चल! अब ले जवन भइल तऽ भइल३ आजुए एगो किरिया खा कि अब से अइसन काम ना करबऽ जवना से तोहरा जीते–जी नर्क भोगे के परे! लोग के नजर से उतरल नरक से कम नइखे। आपना आत्मा के नजर से गिरल मउअतो से बेहतर बा!

तनिका सोचऽ एह बारे में आउर आपन आत्मा के जगावऽ! काहे कि तूँ सामने तऽ अइबे ना करबऽ कि केहू तोहरा के सजा दे सके। हमार ई चिठ्ठी तोहार मरम पऽ चोट कर सके, एहि आस में आजु लिखे बइठल बानी। भगवान करस कि तोहार अबो आँख खुले!

तोहार शुभचिंतक

❑❑

❍ बेंगलूरु

आस में बसंत

हरिओम हंसराज

सावन बीत गइल, ई सीत के लहरियो बीत गइल,
अब त हां कह दऽ प्रिये, ई उमरिया रीत गइल।
ई रीतल उमरिया अब तोहरे दुआरी आ ठहरल बा,
जइसे गंगा के पानी कवनो गहिरा घाट पर घहरल बा।

घहरत ई मन, अब तोहरी गवाही खोजत बा,
खेतन में हँसत सरसों, तोहरी परछाईं खोजत बा।
कोयल कूक के ई सनेस, हर डाल पर पहुँचावल,
कि तोहरे हां कहले ही, हमरो बसंत सफल हो जाइत।

सफल हो जाइत ई जीवन, जदि तू संग होइतू,
फागुन के ई चटख रंग, हमरा अंग–अंग होइतू।
पर तू त चुप बाड़ू, जइसे कवनो सून बगिया होखे,
अउर हम तड़पत बानी, जइसे बिना पानी के नदिया होखे।

नदिया त सागर से मिले खातिर दिन–रात बहेली,
हमरो आस तोहरे हां के, हरदम मार सहेली।
समय जात बा बीती, अब त मन के किवाड़ खोल दऽ,
जवन दबा के रखले बाड़ू, आजु उहे बोल दऽ।

बोल दऽ कि तोहरे हियरा में, हमरो प्रेम पलत बा,
तब जा के बुझाई कि ई मौसम, साँचो में बदलत बा।
ना त ई बसंत आइल–गइल, बस एगो भरम हो जाई,
तोरा बिन ई फागुन, हमरा खातिर करम हो जाई।

❑❑

❍ प्रयागराज, (उ0प्र0)

माफ करिं दशरथ के रघुराई

विवेक त्रिपाठी

माफ करिं दशरथ के रघुराई,
सीता के ई बतिया ''के समझाई?'',
बिधना लिखले,
का हम कहीं, कहाँ जाईं, मनवा के भूलवाई,
माफ करिं दशरथ के रघुराई...

तीनेगो बान भेदलस राम के छाती,
पहिला हमार बाकिर कुल के थाती,
तीनों बचन, एक ही सरन,
लिहलें भीर उठाई, प्रभु के हे प्रभुताई,
माफ करिं दशरथ के रघुराई...

बनवा में होइहें राज दुलारा,
इहवाँ के सून परल बा ओसारा,
निरबल हमके, सोचि समझ के,
दिहे पाप भुलाई, गरवा में अझुराई,
माफ करिं दशरथ के रघुराई...

केहू कही कुछ ना समझ फरीयइहें,
''नोसमझी के'' सिरजल पुण्य कमइहें,
मरियादा में, रघुकुल नायक,
लिहें लाज बचाई भव से पार लगाई,
माफ करिं दशरथ के रघुराई...

चिंता फीकीरिया निकसे प्राण के ज्वाला,
अधरमी के सींचल फूल मुरझाला,
बिनती करिं, सावन हो,
अँखिया दे बरसाई, बिरहिन थाह न पाई,
माफ करिं दशरथ के रघुराई३

❑❑

❍ खोरी, बरहज, देवरिया (उ० प्र०)

घउरा

उदय शंकर प्रसाद

इयाद बहुत आवेला उ दिन ,पुअरा के बराई हो
जहवा पुरा गाव मिले ,उ घउरा के तपाई हो

खाना सबके घरे बने,
बड़का बड़का चूल्हा जरे
मिल बाट सब काम करे/तबो मिल जाय टाइम हो

इयाद बहुत आवेला उ दिन पुअरा के बराई हो

सबके सब से प्यार खूब रहे
ना अईले पे खोजाई हो
गाव के रहस बड़की भौजी/करस उ मुखियाई हो

सभे उनके बात के माने
केहू ना झगड़ाईन हो
हा हा हि ही खूब होखे/पर केहू ना खिसियाई हो

इयाद बहुत आवेला उ दिन पुअरा के बराई हो

रात रात भर घउरा जरे
खींच खींच खूब पुअरा बरे
जेके जबे नींद खुले/उ घउरा पे आ जाई हो

राह चलत सब् केहू तापे
करे हांथ गोड सेकाई हो
जान सभे लोग बीठई देवे/प्यार से लोग बीठाई हो

इयाद बहुत आवेला उ दिन पुअरा के बराई हो

उ घउरा मे कोन सेकाये
आलू भी डलाई हो
तनी तनी सबके मिले/फुक फुक घोटई हो

धीरे धीरे गाव ओराइल
बड़की भउजी माई हो
घर के बगल मे घर बनल
अब घउरा कहा बराई हो

इयाद बहुत आवेला उ दिन पुअरा के बराइल हो

❑❑

आठवीं अनुसूची से!

रामसागर सिंह

भोजपुरिया के सपना के, कब ले बहराई कुची से,
कब ले भोजपुरी बाहरे रही, आठवीं अनुसूची से!

दू लाइन भोजपुरी सुनके,
रउआ तऽ अगरा गइनी,
उहों के तऽ पोलियो जइसे,
दू बून दवा पिया गइनी!
उहां के तऽ डोज पियवनी,
खाली वोट के रुचि से,
कब ले भोजपुरी बाहरे रही,
आठवीं अनुसूची से!

जंतर मंतर बइठ के रउआ,
केतना जोर लगाइब जी,
जब ले संघवा सांसद मंत्री,
नेताजी के ना पाइब जी,
वोट के जब हरियरी देखिहें,
नेताजी अइहें खुशी से,
कब ले भोजपुरी बाहरे रही,
आठवीं अनुसूची से!

भाग्य के छोट भोजपुरी बाटे,
नेता लोग मुंह चोर बा,
भोजपुरी के आवाज ना बने,
पीछे खींचले गोड़ बा!
सवांस नइखे लड़हु वाला के,
आपस के कानाफुसी से
कब ले भोजपुरी बाहरे रही,
आठवीं अनुसूची से!

भोजपुरी से न्याय के खातिर,
आईं अब हठयोगी बनीं,
आईं अब भोजपुरी खातिर
भोजपुरिया के सहयोगी बनीं,
रामसागर कठिन लड़ाई बाटे
लड़ लिहीं मजबूती से,
कब ले भोजपुरी बाहरे रही
आठवीं अनुसूची से!

❑❑

❍ सिवान, बिहार

दू गो कविता

गणेश नाथ तिवारी"विनायक"

(1)

सतावल करेला सुबह शाम हरदम।
पढ़ावल करेला हरे राम हरदम।।

थकल बा हमेशा कमासुत शहर के।
लगावल करेला नरम जाम हरदम।।

सुबह नींद टूटल तमाशा बनवलस।
बतावल करेला जबर काम हरदम।।

गजब के उ कइलसि परम प्रेम हमसे।
रटावल करेला अपन नाम हरदम।।

कहेलन विनायक रही बाँचि उनसे।
करावल करेला उ बदनाम हरदम।।

(2)

दिनभर मीटिंग कके शेखी बघारे
उडनबाज बाड़े
हमरा दाहिने– बाएं मय उडनबाज बाड़े

हमरे में निकसे आ हमके डेरवावे
लाज शरम घोरि अँखिया देखावे
रोज तिकड़मबाजी करे सोंचे ना बिचारे
उडनबाज बाड़े.....

जिनगी भर पुरखा इनके इहे कुल कइले
बाल बच्चा सगरो के इहे कुल सिखवले
इहे हाल रही त एकदिन आई कपारे
उडनबाज बाड़े.....

बनि के बेहाया बाड़े खूब कब्जियावत
मातल घमंडे बनि के घूमेलन ऐरावत
रास्ता घाटे देखेलन ते थूके खंखारे
उडनबाज बाड़े.....

❑❑

❍ श्रीकरपुर,सिवान

जरूर कवनों बात बा

डॉ. हरेश्वर राय

काँव काँव कर तरुए काग अंगनैया
जरूर कवनों बात बा
दैया हो दैया जरूर कवनों बात बा।

मूसवा बिलरिया में बढ़ल बा इयारी
बघवा बकरिया के कहत बा पियारी
सारि घर में राति भर रोवतारी गैया
जरूर कवनों बात बा।

सबूजी कबूतरी चुगत नइखे दाना
मैना के गर से फूटत नइखे गाना
हमरा हिरामन के धइलस जड़ैया
जरूर कवनों बात बा।

साँझी खा चुरइल बोलेले पिछुअरिया
रतिया बिरतिया कुहुक्के कोइलरिया
खोंता तेयाग भागल कल्हियाँ गोरैया
जरूर कवनों बात बा।

सिरिमन नारायण नारायण नारायण

बिल्ली सभ दिल्ली गइली सन कुक्कुर काशी धाम
गदहा सभ घोड़ा भइलन स गटक–गटक के जाम
सिरिमन नारायण नारायण नारायण।

जेकर कुरुतवा जतने लमहर ओतने माल हँसोथे
जे कबहूँ ना बोअल खेंसरियो सभकर बूँटवा चोंथे
सिरिमन नारायण नारायण नारायण।

जवन लगावे फेंड़ बबुरी चाभ रहल मलगोफ्फा
जे बाँसखटिया के लायक ना तूर रहल बा सोफा
सिरिमन नारायण नारायण नारायण।

जवान मुँह जुतिआवे लायक बड़ कचरत बा पान
उल्लू के पठवन भिरिए सभ सीरी उद्धव के ज्ञान
सिरिमन नारायण नारायण नारायण।

❑❑

❍ सतना (मध्य प्रदेश)

गीत

उमेश चौबे "अश्क"

कहली सरहज हमसे हँसि के पहुना भितरी आईं ना,
तीन कटोरी चारि गो भूजा लगवां बइठि के खाई ना

हरकल बानी काहे एतना काहे एतना लजा तानी,
मकई के लावा सेरा गइल मार रे, काहे ना खा तानी?

मिलल चाम के जूता सचहूँ बा कुक्कुर रखवार,
ए बिलार तूं दही अगोरे लहल बा खूब सुतार ।

बात सूनि के लड्डू हमरो लागल भितरी फूटे
हमरा ईहे डर भइल कि लाज के बान्ह ना टूटे ।

पहिलेपहिले हम ससुरारी गइल रहनी भाई,
चढ़ते जाड़ दिन पीडिया के दिन रहे निराइल।

कहली सरहज ए पहुना हंसत रहीं खात रहीं,
दुसर केहू आवे लो ते रउरो तनी लजात रहीं ।

हमहूँ कहनी नून तनी दीं मारिचा खूब जुझार,
ऊपर से मुरई काटि के बइठो तनिक सुतार ।

भुजा खा के पानी पियनी लगनी करे अंगइठी,
तबले छोटकी साली आके पुछली पाहुन बइठीं ?

हमहूँ कहनी दूनू हाथ में लडडू हमरा परल बा,
हे भगवान, हमरो सुनले छांछे सौरा चढल बा ।

लगली हमरो गोड़ दबावें तब सरहज खूब निहारसु,
जब्जब हम उनके देखीं मुसुक चवनिया मारसु।

दूनू जनी के सेवा देखत हमरो भूख भुलाइल,
ई गोपिन में बननी कन्हैया मेहरी तब ले आइल ।

हमके देखली ऊपर नीचे आ लगली आँख तरेरे,
हम कहनी हे बरम बाबा अब इनकर मतिया फेरे ।

नोट निकलनी सोगहक दस गो रहे पांच हजार,
सबकी सोझा सोना कहनी ई रुपया धरे हमार ।

साली, सरहज कगरी भइली बिचिलल बा सुतार,
दस हजार में पहिला हाली भइल पहिल ससुरार ।

फेरू सियार ताड़ तर जइहें नाही कभी अकाशी,
सरहज, साली भा ससुरार में के बाटे विश्वासी ?

हम ना जननी कि ए भाई भंटा रून्हान अब चरी,
सरहज, साली अस मेहरारू अब बखरा हमरे परी

सगरी लिखल हवे कल्पना ना सरहज ना सार बा,
माई सूरसती लिखववली लिखल काम हमार बा ।

❑❑

❍ **गोपालगंज बिहार**

गजल

अभियंता सौरभ कुमार

नजर से नजर मिले अउर कलाम हो जाव,
लव कुछ ना कहे बस दुवा सलाम हो जाव।

जवन दिल मे बात दबल बा उ कही देस नयन से,
हर एक राज बे नकाब हो जाव।

तहरा करीब रही अउर दूर भी
अजब सुकून के ई मुकाम हो जाव।

एक रोज लौट आवा ओहि मोड़ पर कबो,
हमरा राह मे तहार इंतजार हो जाव।

तहरा बिना जवन गुजरत बा रात सुना
कबो हमार दर्द भी सौरभ व्यान हो जाव।

वनावा लभज से अइसन तस्वीर के,
अभियंता के गजल शीशा आ जाम हो जाव।।

❑❑

❍ **सिवान बिहार**

पेंड़ के बचाईं

डा.सुनील कुमार उपाध्याय

आपन महल बनावे खातिर
खोंता रोज उजारल जाता
सघन बगईचा के बीचे से
पक्की सड़क गुजारल जाता।

गड़हा गुड़ुही ताल तलइया
सबके नाव बुताइल जाता
ना इनार ना पावठ चवना
जल के सोत बिलाइल जाता।

कहवाँ रात बितइहें चिरई
बानर सन के आड़ लुटाता
साहिल खरहा घोड़परास का
सियरन के ठेकान छिनाता

ना बसंत में कोइलर कुहुकि
मुर्गा भोरे दी ना बांग
कौआ के ना कांव सुनाई
लागे जन सब खइले भांग।

सावन में अब मोर ना नाची
पपीहा कइसे करी पुकार
झिंगुर अब झंकार ना करीहें
जब ना झमझम परी फुहार।

सबसे बिनती पेंड़ लगाईं
आफत के अब टारीं
सबके कायम रहे बसेरा
अइसन ग्यान बघारीं।

❑❑

❍ पूर्व प्राचार्य, एल. पी.शाही
कालेज, पटना

मार्कन्डेय शारदेय

हम पतझड़ लतियावल जाईं?

तू बसन्त जी, मौज उड़ावे
हम पतझड़ लतियावल जाईं?
एके घर के जनम पलाइल,
तू राजा हम रंक कहाईं?

छवो आदमी के हक जब
मिलही के बा पारा–पारी।
हमरा के तू देखि जरेले
काहें हो लें अत्याचारी?
बड़का भइया! बहुत सतइले
कइसे हिय के आगि बुझाईं?
तू बसन्त जी, मौज उड़ावे
हम पतझड़ लतियावल जाईं?

मझिला भइया पर तहार
ना दाल गलेले राजनीति के,
आँखि तरेरेला ते धोती जाले
सरकि व्याज रीति के,
ओकरा किहाँ बसाइल ना ते
अबर अनुज के खूब सताईं?
तू बसन्त जी, मौज उड़ावे
हम पतझड़ लतियावल जाईं?

ओनइस से ना बीस बने देले
हमरा के आजीवन तू,
बिसवें दिवस बसन्त पंचमी
मनवावत अइले सज्जन तू,
ई तहार घुसपैठ चाल कइसों
हम शेष समय अड़ि पाईं।
तू बसन्त जी, मौज उड़ावे
हम पतझड़ लतियावल जाईं?

अरे! ढेर समय रहला से
अउर बड़ा हो जइबे भाई?
जीये आ जीये दे सभके
एही में बाटे मनुसाई,
तू सनेह दे छोट जानि के
जेठ जानि सर्वस्व चढ़ाईं।
तू बसन्त जी, मौज उड़ाव
हम पतझड़ लतियावल जाईं?'

❑❑

❍ पटना , बिहार

हम लड़त हई...... अउर लड़ब

डॉ. आनन्द कुमार राय

धीरे–धीरे.... जीवन का डोर छूटत हौ
ई समय, ई संघर्ष, ई गरीबी,
ई बेबसी, ई कमजोरी.....
सब के सब कूँटत हौ।
धीरे–धीरे.... जीवन का डोर छूटत हौ।
कितना वक्त गुजरि गा
जिंदगी क कितना बड़ा हिस्सा निकलि गा
आखिर का पावऽ खातिर
आखिर.... का पावऽ खातिर
......
....
कितना संघर्ष करत हइ
कितना जूझत हइ

अउर ई जूझब...............
हमार हमरे से हौ
हमरे बीवी–बच्चा से हौ
हमरे परिवार से हौ
हमरे संगी–साथी से हौ
समाज से हौ
....
लड़त हइ....
लेकिन
टूटत हइ....
अउर ई टूटन के खिलाफ लड़के...
हर दिन खड़ा त हो जाऽत हइ....
लेकिन अगर
ई दूनों जंग में
केकर पलड़ा भारी हौ?
अगर ई तैं करऽ के हो...
त हम टूटत हइ।

का हौ हमरे अंदर
ओसे हम कवन लड़ाई लड़ लेऽब....
लड़त हइ
लेकिन का कुछ जीत लेब
कइ बार एप्पर हम सोचे हई
बड़ा मंथन करे हइ
.....
हर बार मंथन मन के हल्का कर देऽला
कुछ बोझ भी हल्का हो जाला
....
हारा त अपने आपके पाईला जरूर
लेकिन......
ई हारऽ से जिंदगी रुक थोड़ी जाला
चढ़अ के त पड़बअ करी
....
......
हम त अपने नजर में चढ़अ थई
दुनिया के नजर में
भले से
ई असफल चढ़ाई के
उतरब कहत होंय
पर हम त चढ़त हई
......
हम्मअं त विश्वास हौ
कि हम कुछ हांसिल जरूर करब
कासे हम लड़त हई।
हम लड़त हई......
अउर लड़ब।
दुनियां जवन कहऽ....
कहऽ
दुनियां क त काम हो कहब।

❑❑

❍ वाराणसी (उ०प्र०)

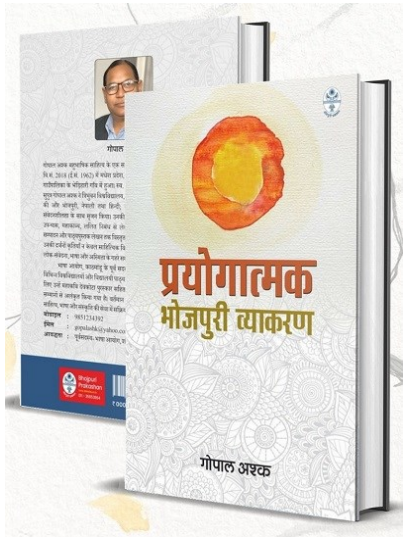

समय के सापेक्षता : ककुद्मी से आइंस्टाइन तक

शशि रंजन मिश्र 'सत्यकाम'

खंड–1 : ब्रहम लोक के जतरा

सुनी कहानी कई जुग पहिले
घटना बड़ा विचित्र घटल,
कइसे छन भर के फेरा में
समय के गति के रहे बदलल।

कुशस्थली के राजा ककुद्मी,
मन में भारी एक सवाल,
रेवती बिटिया रूप–गुण खानी,
वर ना मिलत, बढ़ल खयाल।

मन के चिंता उनकर अब
दिनों दिन बढ़ियाय,
कवनों वर ना जोड़ के मिले
लइकी के उमिर बढ़त जाय।

राजसभा सून लागे रोजे,
धरती भर में खोज भइल,
कउनो वर जँचल ना उनका
मन थाक तरस के थोर भइल।

रात बिराते नृप जागें
बाप के हियरा बोले,
काहे किस्मत रूठल
आंखी में सागर डोले।

जप तप पूजा केतनो होखे
ना जुटे बियाह के संजोग,
मन के पीड़ा बढ़त जाय
बीते असहीं जीवन रोज।

देवता पितर रोज गोहरावें
बाकि ना सुलझल सवाल,
सोचले फेर ब्रह्मा से पूछीं
भाग्य में एकर का जंजाल!

जे लिखल तीनों लोक के लेखा
उनके से इ पूछब सवाल,
कवना सियाही से लिखनी ए बाबा
भाग्य बेटिया के कपाल !

रथ सोना के साज के चलले
रेवती साथ जतरा नधाइल,
धरती छोड़ तारा सूरज छुटल
ब्रह्मलोक के राह धराइल।

बितल होई कुछ पहर
पहुँचले राजा ब्रह्मा दुआर,
भीतर सभा ब्रह्मा के लागल
राह देखवलस पहरेदार।

खंड–2 : ब्रह्माजी से भेंट, जुग के बदलाव

ब्रह्मलोक में बइठल सभा,
देवगन के बीच मल्हार,
हाहा–हूहू''' उठवलें तान,
नाद में डोलल सब संसार।

हाहा छेड़ले वीणा–राग,
गुंजल नभ–आकाश।
हूहू तान खींचत जास,
बरसे मधुर सुवास।

राजा मगन हो गइले
गीत में रमल सभा सुजान,
राग–रस बहल बंद भइल त
टूटल फिर राजा के ध्यान।

कर प्रणाम ब्रह्मा से कहले–
रेवती जुकुत वर ना पवनी
बाबा एकर करम में का बा
भाग्य एकर का बनवनी।

हँस ले ब्रह्मा कहले राजा से
कवना भरम बाड़ऽ भाई,
बीतल युग पाछे केतना
अब का तहार युग भेंटाई!

एहिजा के समय बा थथमल
धरती के समय के वेग बरियार,
एहिजा छन भ बितल ना
धरती कइली कई जुग पार।

जवन वीर रहलें समय में तहरा
उनका के खा गइल बा काल,
कई सौ पीढ़ी बदल गइल
समय के अलगा–अलगा चाल।

कुशस्थली अब बनल द्वारिका
चलत द्वापर के काल विधान,
योग्य वर ओहिजे मिलिहें
शेषनाग अवतारी हलधारी बलराम।

राजा लवटले धरती पर
त देखले अजब अचम्भा,
छोट मनुष्य के देखले
जे उनकर युग में रहले लंबा।

शरीर के छय, बल के छय
जीवन के अब ले बदलल,
समय गति के फेरा अइसन
जुग बदलल त जग बदलल।

जाके मिलले बलराम से
कहले रेवती के वरण के बात,
बाकि अपना से दुगना लम्बा
बेमेल जोड़ी के कइसन साथ।

छुआ देले हल रेवती के माथा से
कद घट गइल युग–मान,
बलराम रेवती के बियाह भइल,
जोग जुटल, भइल कल्याण।

खंड–3 : बदरीनाथ में तपस्या आ मोक्ष

बसल घर बेटी के अब त
राजा के कर्तव्य पूरा भइल,
बैरागी बन के करब तपस्या
राज–पाट जब काल खा गइल।

उत्तर दिशा के ध के राह
नर–नारायण धाम के चलले,
बदरीनाथ में कर के तपस्या
मुक्ति माया के संसार से पवले।

ई कहानी समय के नियम
सिद्धांत सापेक्षता के बतावेला,
अलग–अलग गुरुत्वाकर्षण में
समय अलग–अलग गति पावेला।

खंड–4 : आधुनिक विज्ञान आ सापेक्षता के सिद्धांत

बितल द्वापर, आइल कलियुग,
विज्ञान बनल बलशाली,
देख–परख के जाँच बुझावेला,
उहे कहाइल बुद्धिशाली।

घड़ी हाथ में, समय नापेला,
सेकंड–मिनट के देखीं खेल,
आइंस्टाइन कह दिहल साफेकृ
समय ना सब जगह एके मेल।

अलग अलग ग्रह पे होला
समय के अलगा मान,
भरी हलुका गुरुत्व बल से
समय के चाल न एक समान।

अंतरिक्ष बा टेढ़, समयो टेढ़ा,
ब्रह्मांड के इहे विधान,
अलग–अलग बिंदु पर समय के,
अलग–अलग बाटे पहचान।

आज उपग्रह, आज घड़ी,
जीपीएस देला सही प्रमाण,
आइंस्टाइन के सूत्र बिना त,
रास्ता भुला जाई इंसान।

बाकि विज्ञान बढेला जेतना
सवालो ओतने उपजावेला,
अनंत ब्रह्मांड के सच का ह,
खोज में दिन रात बितावेला।

पुराण कहे कथा के भाषा,
विज्ञान बोलेला सूत्र–विचार,
बाकि दूनो कहे एके कहानी–
समय सापेक्ष ह, सत्य अपार।

(' हाहा–हूहू – दू गो यक्ष लोग के नाम ह जे गीत संगीत में निपुण रहे)

❑❑

द्वारका , नई दिल्ली

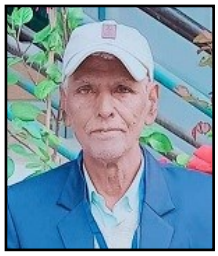

प्राज्ञ दिनेश गुप्ता के मुक्तक कृति

रामप्रसाद साह

प्राज्ञ दिनेश गुप्ताजी कवनो परिचय के मोहताज नइखन।हिनकर कलम विभिन्न विधा में समान रूप से चलेला ।लगभग एक दर्जन कृति प्रकाशित होके बाजार में बा ।ओमें से ''अन्हार के शहर में''(2071) आ गजल संग्रह ''सुतल अब ठीक नइखे''(2073)बाड़े सन् ।हिनकर गजल विभिन्न कार्यक्रम में सुनले बानी ।

गजल के अभ्यास में रहल व्यक्ति का मुक्तक लिखेके सुविस्ता होला ।चार चरण के मुक्तक खातिर गजल के मतला आ मिसरा दू पंक्ति राख देला से मुक्तक हो जाला ।माने ऊ अपना में पूर्ण होयके चाही।ओइसे त दिनेश जी का छनद/बहर के ज्ञान बा ।माने मुक्तक लिखे में छनद/बहर के जरूरत ना पड़ेला ।लेकिन छनद/बहरे में भी लिखल जा सकेला ।

प्रायः चार चरण के मुक्तक 1 से 6 पंक्ति तक हो सकेला विद्वान लोग के मत बा ।मुक्तक एगो मुक्त काव्य हऽ।एह हिसाब से मुक्तक भोजपुरी के कहाउत, परतोक,सूक्ति,सुभाषित आदि मुक्तक के रूप ले लेला ।चार चरण के चौपद्दी, चौपाई आ रुबाई आदि मुक्तक के श्रेणी में आ जाला । दू पंक्ति के सूक्ति, कहाउत आ परतोक के एगो विशेषता होला । ओकरा पीछे एगो लोक कथा छुपल होला । जवन ओके प्रमाणित करेला। बसर्ते कि कहाउत,परतोक आ सूक्ति अपना में पूर्ण होला ।

अब इयाद परता रुबाई जवन चार चरण के होला ।रुबा के अर्थ फारसी में चार होला। हिन्दी में रुबाई लिखेवाला एस.टी.आर. कैम्पस, वीरगंज के हिन्दी के प्रोफेसर स्व. गौरी शंकर सिंह रहले उनकर घर बारा जिला के तेलकुंवा गाँव रहे ।उनकर हिन्दी रुबाई हम पढ़ले रहीं ।रुबाईयो मुक्ति काव्य हऽ । जवन फारसी से आइल । रुबाई लेखन कठीन कार्य हऽ , जगन्नाथजी के कहनाम हऽ काहे से कि रुबाई बहरे हजज में लिखल जाला । जेकर 24 गो वजन मुकर्रर कइल बा । ओमें से 6 गो वजन पर श्री सूर्यदेव पाठक ''पराग''जी भोजपुरी में रुबाई लिखले बाड़े।

एगो उदाहरन :———

''बेटा बेटी में अन्तर का बाटे
बेटी जनमल काहे लागे काटे
माईबाबू के दुःख समझे बेटी
बेटा पढ़के लागे इंगलिश छाटे''

अब चले जांव दिनेशजी के मुक्तकारिता का ओर –

1)जे ना सहेके सह जाइले
खून के घूँट पिके रह जाइले
कवनो उपाय ना लउके तब
लोर बनके आँख से बह जाइले

भोजपुरी में एगो कहाउत बा ———
जे सहेला, ओकरे लहेला

+ +

मजबुरी के नाँव गांधी जी ——
बहुतो अतते ना करेके ओकर परिणाम अच्छा ना हो खे। सहके रहला पर आशावादी रही। राउर मनोकामना समय आ समाज पूरा करी।लोर अंतिम हथियार हऽ ।बेसी अनाचार/अत्याचार भेला पर आशावादी रही ।

केतना मेहरारू पर निरीहता के चलते, अत्याचार के चलते गढीमाई मंदिर परिसरम में सुई रोपल देखल गइल बा । देवी से न्याय मांगत। लोग कहेला मजबूरी के नाँव गांधी जी , जे सत्य पर रहले अंग्रेजन खधेड़ देले। लोर दुश्मनो के पराजीत कर देला । लोर त दर्शकन के संवेदित करेला ।

17) शोषण अउरी बढ़ गइल बा
बाकिर एकर रूप बदल गइल बा
पहिले गारी देके बोलावत रहे
अब बाबू कहके बोला रहल बा

हँ !शोषण के तरिका परिवर्तन हो गइल बा। अब रे ना– जी कहे के आदत हो गइल बा
माने प्रवृति में कवनो परिवरतन नइखे। इहे कटाक्ष ई मुक्तक में व्यक्त बा ।

29) जिनगी में हम बहुत कमइनी
गाड़ी, बंगला ,बैंक बनइनी
ई त सब बेटा के भइल
अपना खातिर हम का कइनी

आदमी जिनगी भर कमाके भौतिक संपति जोड़ेला। बृध्द भेला पर भा मरला पर ऊ सब संपति बेटा के हो जाला । मुक्तकार दिनेशजी अपना से प्रश्न करतारे———— तू का कइल अपना खातिर । ई प्रश्न से सभे लाभान्वित होता । मरके जीवित रहेला कुछ करेके चाही।यश के काम, भलाई के काम कुछ निर्माण करके, कृतिजोड़के जा जवन तोहरा के अमर बधाई ।दुनिया में तू भानुभक्त के घँसवाह हो जा ।

मदर टेरेसा होजा, गांधी होजा आ मार्क्स होजा । मोदी होजा ।

45 जिनगी जियल मुहाल भइल बाटे
का कही कइसन हमार हाल भइल बाटे
कबो रहे मुर्गी दाल के बराबर
अब मुर्गी से महंगा दाल भइल बाटे

व्यक्ति के जिनगी के तरफ दिनेशजी के इशारा बा । व्यक्ति के हालत बद से बदतर हो गइल बा ।अइसन नाजुक हो गइल बा – जब कमिनी रहे त दाल आ मुर्गी में फरक ना रहे अब कमिनी नइखे त मुर्गी से दाल महंगा बा । कवनो समय रहे कृषि पैदावार के बढन्ती से दलहन निर्यात होत रहे ।अब घटन्ती में मुसीबत बा ।कृषि में खाद बिया के सब्सिडी आ समय पर उपलब्धता नइखे त महंगाई के मार सहे के परता ।कृषकमुखी सरकार नइखे।

दिनेश गुप्ताजी के मुक्तक कृति '' **आन्हर के शहर में**' 62 गो मुक्तकन समावेश बा । मुक्तक एक से बढ़के एक बा ।एके बेहतरीन ना बेमिशाल मुक्तक कहल जा सकेला ।कृति के कथ्य आ शिल्प बेजोड़ त बड़ले बा।एह संग्रह में दुःख दरद,कष्ट आ बिपति पाठक के संविदित करता । ईर्ष्या,बेइमानी आ विसंगति पर कठोर प्रहार कइले बा । सही मार्ग दर्शन के ज्ञान प्रदान करता । समग्र में कृति गागर में सागर नजर आवत बा । नेपालीय भोजपुरी साहित्य के प्रथम मुक्तक कृति के दोसर संस्करण खातिर हमरा तरफ से अनन्त शुभकामना ।जय भोजपुरी।

❑❑

कलैया, नेपाल

डॉ.संतोष पटेल

'धधकत सुरुज पियासल धरती' – ईको पोएट्री आ ईको क्रिटिसीज्म के एगो नया आयाम

कनक किशोर भैया के पर्यावरणीय कविता संग्रह 'धधकत सुरुज पियासल धरती' आजु के समय में एगो बहुत जरूरी साहित्यिक दस्तक बा। अइसन समय में जब पूरा दुनिया जलवायु परिवर्तन आ ग्लोबल वार्मिंग के खतरा से जूझ रहल बा, ई किताब भोजपुरी साहित्य में 'ईको पोएट्री' (Eco&poetry) के परिभाषा के नया विस्तार दे रहल बीया।

दरअसल, ई समीक्षा एह बाति पर केंद्रित बा कि ई किताब ईको क्रिटिसीज्म (म्बव–बतपजपबपेउ) के वैश्विक कसौटी पर कइसन उतरतिया आ कइसे लोक–संवेदना के संगे पर्यावरण के सवाल के जोड़तिया।

ईको पोएट्री के परिभाषा आ कनक किशोर के दृष्टि ईको पोएट्री खाली प्रकृति के सुंदरता के बखान ना ह, बलुक ई मनुष्य आ प्रकृति के बीच के बिगड़त संतुलन के जाँच–परख ह।

कनक किशोर अपना किताब के भूमिका में साफ कहले बाड़न कि आजु के 'इको लिटरेचर' असल में 'इको पोयट्री' के ही फलाफल ह। ऊ प्रकृति के खाली एगो वस्तु ना, बलुक एगो जीवंत सत्ता मानत बाड़न जेकरा से मनुष्य के प्राण जुड़ल बा।

किताब में ईको पोएट्री के तीन गो मुख्य आयाम लउकेला– पारिस्थितिकी संकट के पहचानः जइसे 'धधकत सुरुज' आ 'पियासल धरती' के बिं. ब।मानवीय लालच पर प्रहारः 'आ बैल मार' वाला स्टाइल में नेवतल संकट।विकल्प के तलाशः '

हरित उलगुलान' के माध्यम से प्रकृति के बचावे के संकल्प।ईको क्रिटिसीज्म के कसौटी पर किताब ईको क्रिटिसीज्म साहित्य आ भौतिक पर्यावरण के बीच के संबंधन के अध्ययन ह। ई किताब एह कसौटी पर तीन प्रमुख बिंदुवन के आधार पर खरी उतरत बीयाः

1- **विकास बनाम विनास**

(Development vs Destruction)

ईको क्रिटिसीज्म के एगो बड़ पक्ष बा आधुनिक विकास के आलोचना। कविता 'विकास' में कवि कहत बाड़न कि 'विकास' शब्द सुनतहीं अब डर लागेला काहे कि ई 'विनास के जननी' बनि गइल बा। 'बौना पहाड़' कविता में हाईवे के निर्माण खातिर पहाड़न के काटे आ जंगल के उजड़े के जे दरद बा, ऊ ईको क्रिटिसीज्म के मूल स्वर ह।

''विकास बाबू तोहार–हमार जिनिगी खा गइलन, नंगा बौना पहाड़ आजु आगि उगलत बा''।

2- **जोंक संस्कृति आ व्यवस्था के पोल**

(The Critique of Systems)

ईको क्रिटिसीज्म व्यवस्था से सवाल पूछेला। कविता 'कठघरा में पेसी' में कवि सीधे तौर पर तीन गो 'जोंक' के पहचान कइले बाड़नः सरकार, व्यापार आ ठेकेदार। ई प्रतीकात्मक प्रहार बतावत बा कि पर्यावरण के असली दुश्मन कवन बा। 'मुआवजा' कविता में ऊ सवाल उठावत बाड़न कि का कवनो सरकार एगो पेड़ के असली मोल चुका सकेले?।

3- **लोक–संस्कृति आ प्रकृति के अगाध प्रेम**

(Cultural Ecology)

भारतीय परंपरा में पेड़–पौधा के परिवार के हिस्सा मानल गइल बा। 'बड़ दादा' कविता में बरगद के पेड़ के गाँव के 'दादा' मानल 'कल्चरल ईकोलॉजी' के बेहतरीन उदाहरण ह। ओसही, 'नदी मर गइल' में नदी के सिर्फ पानी के स्रोत ना, बलुक 'सभ्यता के इतिहास' के रूप में देखल गइल बा।

प्रमुख कवितन के संदर्भ में पर्यावरणीय चेतना

'धरती माई सुनीं ना अरजिया हमार': ई कविता मनुष्य के अपराधबोध (guilt) के स्वर ह। कवि स्वीकार करत बाड़न कि 'अपना स्वार्थ में लुटनी छुट के, जंगल अउरी पानी'।

'गंगा माई': ई कविता 'नमामि गंगे' जइसन सरकारी योजनान के ढोंग आ गंगा में गिरत कचरा पर तीखा प्रहार बा। 'माता कुमाता न भवति' के हवाला देत कवि गंगा के सूखल धार पर चिंता जतावत बाड़न। 'प्रवासी चिरई': ई कविता पलायन के दरद के संगे–संगे ईको–सिस्टम के टूटला के कहानी बा। शहर के चकाचौंध के 'अफीम' कहल गइल बा जे गाँव के माटी से मनई के दूर कर देत बा।

'निरबंसिया': हाइब्रिड बीजन आ खाद–रसायन के कारण बंजर होत धरती के ई कविता एगो डरावना बाकिर सांच चित्र पेश करतिया।

निष्कर्षतः

'हरित उलगुलान' के जरूरत

कनक किशोर के ई किताब खाली रुदन (lament) ना ह, ई एगो आह्वान ह। संग्रह के आखरी कविता 'हरित उलगुलान' बिरसा मुंडा के क्रांतिकारी चेतना के पर्यावरण से जोड़तिया। ईको क्रिटिसीज्म के अंतिम लक्ष्य साहित्यिक सक्रियता (बजपअपेउ) ह, आ ई किताब 'जल, जंगल, जमीन' बचावे खातिर 'हरित उलगुलान' के बात क के अप. ना साहित्यिक धर्म के बखूबी निभावतिया।

कुल मिला के, 'धधकत सुरुज पियासल धरती' भोजपुरी साहित्य के अमूल्य निधि ह। ई किताब हमनीं के चेतावतिया कि जदि 'पियासल धरती' के पियास ना बुझाइल आ 'धधकत सुरुज' के तपिस ना कम भइल, त 'कुछ ना बांची'।

एह उम्दा संग्रह खातिर कनक किशोर भैया के हार्दिक बधाई।

❑❑

❍ **द्वारिका, नई दिल्ली**

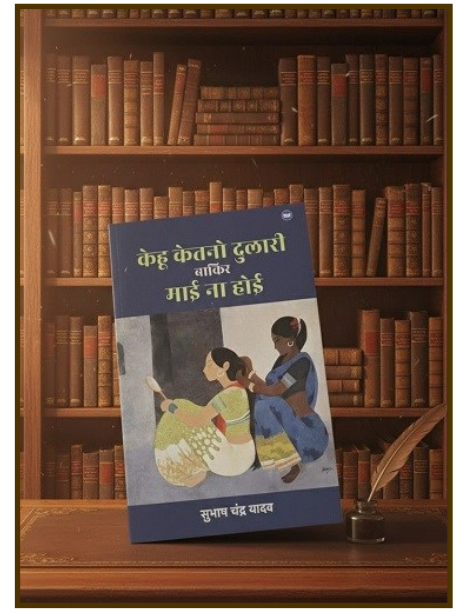

एगो सुघर आ रसात्मक आलोचकीय कृति, 'भोजपुरी उपन्यास आ देस'

मीनाधर पाठक

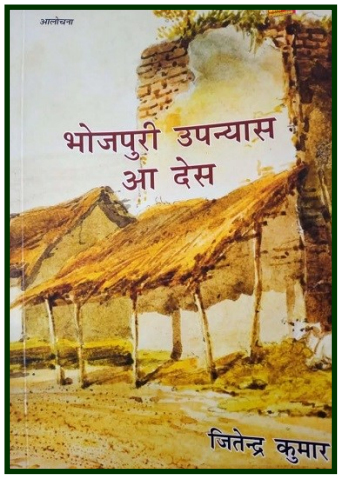

हिंदी साहित्य के बिधा में आलोचना एगो आइसन बिधा बिया कि ओकरा बिना साहित्य संसार आधा अधूरा बा। कवन लिखनिहार ना चाहे कि उनके लेखनी पर कवनों आलोचक के दृष्टि ना पड़े! जवनी रचना पर आलोचक के दृष्टि पड़ि जाता आ ओ रचना पर ऊ आपन कलम के नोक ध दे ताड़ें ओ रचना के लि खनिहार अपना के धन्य मानताड़ें। ई जरूरियो बा कि जवन कुछ लिखाता, ओके एगो आलोचकीय दृष्टि से देखल आ बाँचल जाउ। अइसने एगो आलोचकीय कृति हे 'भोजपुरी उपन्यास आ देश'। जवना के लिखले बानीं आदरणीय जितेंद्र कुमार जी।

उपन्यास के भूमिका में एगो लमहर आलेख बा 'उपन्यास के वैश्विक परिदृश्य आ भोजपुरी उपन्यास'। जवना के आरम्भ भइल बा 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के 27वाँ सम्मेलन के चर्चा से। ओ तमाम चर्चा में भोजपुरी उपन्यास के धीम लेखन पर चिंता जतावल गइल बा। ए लेख में भोजपुरी उपन्यास परंपरा में तमाम ऐतिहासिक, पौराणिक आ यथार्थवादी उपन्यासन के याद करावल गइल बा। जैसे घूमिल चुनरी, रावन उवाच, सती के सराप, तोहरे खातिर, परशुराम, विश्वामित्र के आत्मकथा आ बिंदिया से ले के बनचरी ले, ढेर कुल उपन्यास पर बात कइल गइल बा। एक जगहि जितेंद्र जी कहतानीं कि "2023 में 56गो किताबन के प्रकाशन के सूचना बा, लेकिन वोह सूची में कवनों भोजपुरी उपन्यास नइ खे। ई चिंता के बात बा। भोजपुरी भासा के मूल प्रवृत्ति अबहियो गीत–गजल कविताई का ओर बा।"

हिंदी आ भोजपुरी उपन्यास के तुलनात्मक अध्ययन करत जितेंद्र जी आगे लिखत बानीं कि "हिंदी आ भोजपुरी के जमीन एके बा, ओकर सामाजिक संरचना, राजनीतिक द्वंद्व, सांस्कृतिक अवधारणा के धरातल समान बा। प्रश्न बा कि सृजनात्मक धरातल पर अतना अंतर काहें बा? के पाठकीयता बढ़ता आ भोजपुरी के घटत काहें बा ? सामाजिक – सांस्कृतिक, राजनीतिक अनुभूति में अतना खाई काहे बा? "

प्रश्न वाजिब आ चिंतन मनन करे जोग बा बाकिर तनिएसा आगे बढ़ला पर लेखक अपनिए प्रश्न के उत्तर देत देखाई देतानीं। उहाँका लिखतानीं, "एगो धारा वर्तमान के सुलभ यथार्थ आ बदलत सामाजिक–राजनीतिक–सांस्कृतिक मूल्यन के कथात्मक प्रस्तुति से घबरात बा। हिन्दी में अइसन बात नइखे। एही से हिन्दी उपन्यास के पाठकीयता बढ़ता आ भोजपुरी उपन्यासन के पाठकीयता घ टता।"अपनी एही बाति के बजबूती देत हिन्दी के नागार्जुन आ रेणु के उपन्यास 'बलाचानामा' आ 'मैला आँचल' के चर्चा क रहल बानीं। ए उपन्यासन के जबरजस्त फैन फालोइंग के देखत लेखक के मन में टीस बा कि "भोजपुरी के नागार्जुन आ रेणु आखिर के होई ?"

भूमिका के रूप में ई आलेख अपनी पठनीयता के साथे ज्ञानप्रदो बन पड़ल बा। उपन्यास विधा में लेखक के अध्ययन आ पड़ताल एतना गहिर बा कि देसे ना, बिदेसो के उपन्यासन के मर्म के छूवत चलता ई आलेख। जइसे– 'हाफ ऑफ ए यल्लो सन', 'आफ्टरलाइफ', दी सेवन मुंस ऑफ माली अलमीड़ा' ए कुल उपन्यासन के रचनाकाल, प्रक्रिया आ कथानको पर बात क रहल बा ई ले ख। ए तरे ई किताब भोजपुरी उपन्यास के अतीत आ वर्तमान पर एगो गहिर दृष्टि डालत बिया।

ए किताब के पढ़ला पर पता चलता कि भोजपुरी उपन्यास भले कम लिखाइल होखें, बाकिर सामाजिक ऐतिहासिक, पौराणिक, सब उपन्यास भोजपुरी में उपलब्ध बा। आगे एगारह उपन्यास के आलोचना से ई पुस्तक पाठक के समृद्ध करत बिया। एगो बहुत पठनीय चिंतन मनन करे जोग आ भोजपुरी लेखन खातिर कुछ जरूरी प्रश्न खड़ा करत ए कृति के लिखनिहार आदरणीय जितेन्द्र कुमार जी के सादर साधुवाद बा।

आलोचना पुस्तक – भोजपुरी उपन्यास आ देस
लेखक – जितेन्द्र कुमार
प्रकाशक – न्यू वर्ड पब्लिकेशन, दिल्ली
मूल्य – 225/–

❑❑

कानपुर,(उ0प्र0)

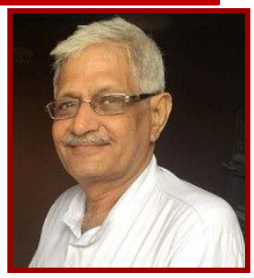

गज़ल

अनिल ओझा नीरद

ऊ अतनो महान थोड़े ह।
आदिमी ह,भगवान थोड़े ह।।

केतना त कुरबानी मांगे ला।
ई इश्क,आसान थोड़े ह।।

कइसे तुरब बताव त एह के।
दिल ह,सामान थोड़े ह।।

ई का सउदेबाजी से चली।
दोसती ह,दोकान थोड़े ह।।

केतना ले रंग बदलि पाई ई।
गिरगिट ह, इन्सान थोड़े ह।।

सभके भला ऊ काहें सोची।
नेता ह, किसान थोड़े ह।।

शान्ति से जीयल इहां त मुश्किल बा।
दुनिया ह,अश्मशान थोड़े ह।।

हमार जिनिगी बसेले एही में।
घर ह, मकान थोड़े ह।।

जब ले जीय मुस्कुरा के जीय।
हंसला प,लगान थोड़े ह।।

❑❑

❍ **कोलकाता, प0 बंगाल**

परिवार

मनोज कौशल

अब त गजबे भाषा हो गइल
परिवार के अलगे परिभाषा हो गइल।

केहू के केहू से ना बाटे मतलब
जे कमाता रुपिया सबसे खासा हो गइल।

भाई के साथ भाई क प्यार बाटे
परिवार में औरत के दुश्मन औरत हो गइल।

बाबू और माई के साथ झांसा हो गइल
परिवार के अलगे परिभाषा हो गइल।

एगो विचार सब ठान लिहिं मन में –

बचवा लोगन के संस्कार सिखावे के पड़ी
तबे हमार हिंदुस्तान आगे बढ़ी।

अब त गजबे भाषा हो गइल
परिवार के अलगे परिभाषा हो गइल।

❑❑

❍ कैमूर, बिहार

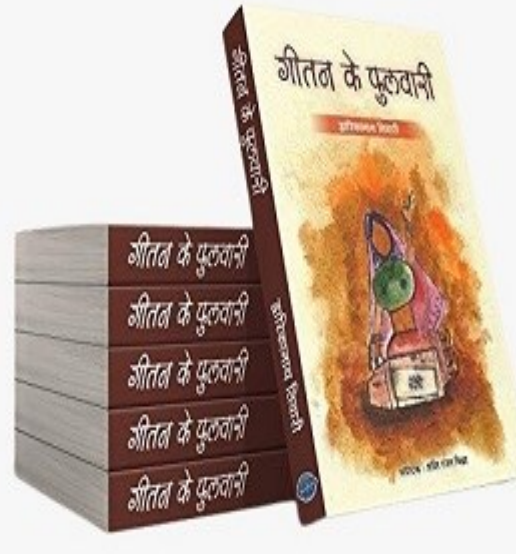

'बिहारी मजदूर': एगो कविता: एगो व्याख्या

विष्णुदेव तिवारी

जब एगो कविता अपना छोटहन कलेवर में एगो मार्मिक परिवेश आ मनुजता के एगो बड़हन पीर–क्लेश के चित्र उगाहे आ बिना ठकठेन नधले साँच के तहे–तहे खोल के बतावे तब ऊ कविता साहित्य के बड़हन विभूति हो जाई, एमे कवनो शक नइखे। डॉ ब्रजभूषण मिश्र के रचल 'बिहारी मजदूर' अइसने काव्य–विभूति ह, जे साँझ के उदासी से उगत बा आ जिनगी के साँझ के झाँक देखा के बिसइ जात बा। कविता के शुरुआत अइसे होत बा–

रोजे–रोज जुटेलन स
स्टेशन पर
बिहारी मजदूर
झुंड के झुंड,
जवना के हाँकेला
एगो चरवाहा
जइसे कि माल–गोरू होखन स!

आ कविता ए तरी बिसवतिया–

गाँव के स्टेशन पर
:केला एक्सप्रेस
जहँवा उतार दियाला
लस्त–पस्त हालत में
बिहारी मजदूर,
ना त
ओकर सड़ाँध मारत
बजबजात लाश।

रोजी–रोटी खातिर आपन जमीन, घर–दुआर आ जमीर– सबके छोड़ के परदेश जाए के त्रासदी बिहारी लोग सुराज मिले के पहिले से देखत आ भोगत आ रहल बा, बाकिर सुतंत्रो होखला के बाद स्थिति उहे रह जाई, बलुक पहिलहूँ से बिगर जाई अइसन आशा त' ना रहे। ई स्थिति बिहार के जटिल होत जा रहल पारिवारिक आ सामाजिक जीवन के साथे–साथ घाघ आ दाग–दाग हो रहल राजनीतिक व्यवस्था के भी परिचय दे रहल बा, जे स्वारथ में सउनाइल अपना खातिर त' सुवरन महल बनावत जा रहल बा आ जे ओके पगरी दिहलस, ऊँच आसन पर बइठवलस, ओके मरे–बिलाए आ देसा–देसी छिछिआए खातिर बगेदत जा रहल बा। एह बगेदइला के दृश्य कवि के शब्दन में देखल जाउ–

डिब्बा में कोंचाइल,
बोरा अस लदा के
छल्ली लागल
भा छत पर पटाइल,
'शहीद', 'जनसेवा', 'साबरमती'
धकधकात रेल
हो जाला 'पवन'।
अपनन से दूर,
फाँकत सपनन के धूर
पहुँच जाला–
पंजाब, दिल्ली, गुजरात, मुंबई।
जाँगर ठेठावत,
रात–दिन एक करत,
जीयत–मरत
अंगुरी पर गिनेलन स
दिन–हप्ता–महीना–साल।

ई जरूर अखियान करे लायक बा कि बिहारी मजूरन के पलायन पहिले कलकत्ता आदि पूरबी बनिजिया कहाए वाला जगहन पर होत रहे। भिखारी ठाकुर के बिदेसी यद्यपि कलकत्ता कवनो दुख–तकलीफ से नइखन जात, मउज–मस्ती करे जात बाड़े, तबो उनकर प्रवास ई त बतावते बा कि ओघरी कलकत्ते गमनकेन्द्र रहे। 'बिदेसिया' के एगो दृश्य देखे लायक बा–

(एक ओर से पहिले बिदेसी आ दोसरा ओर से प्यारी सुंदरी के प्रवेश)
बिदेसी : हो प्रानप्यारी, सुनतारू?
प्यारी सुंदरी : का कहतानी, ए स्वामी जी?
बिदेसी : एगो सलाह बा।
सुंदरी : भला कवन सलाह बाटे?
बिदेसी : सलाह बा कि हमार मन करता जे तनी कलकत्ता से जाके हो अइतीं।
सुंदरी : ए रवों, रउआ कलकत्ता जाए के कहत बानीं, रउआ कवना बात के तकलीफ बाटे?
बिदेसी : हमरा कवनो बात के दुख–तकलीफ नइखे, बाकी हमार दोस्त अइलन हा कलकत्ता से। कलकाता के समाचार सुनि के हमरो तबीयत

कइले बा कि हमहूँ जाइब। हम पन्द्रह दिन में लवटि के चल आइब।

(II)

पाण्डेय कपिल के उपन्यास 'फुलसुँघी' में भी कलाविद महेन्दर मिसिर के कलकत्ता प्रवास के जिकिर बा आ एहिजो कारन आर्थिक नइखे। ई अलग बात बा कि जे जहाँ जाई ओहिजा कुछ काम करे के परी तबे पेट पोसाई। हँ, चेट के बरियार लोग जेकरा पर लक्ष्मी कृपालु बाड़ी, कुछ दिन, कुछ महीना–बरिस सुतलो रह के कचरमकूट मचा सकत बा।

महेन्दर मिसिर बनारस में, केसरबाई के कोठा पर अपमानित होखला के बाद, कलकत्ता के राह धइले रहले। रसिक हृदय मिसिरजी के ई ना बुझाइल कि उनके चेलहाइ में पूरबी के सिरमौर बने खातिर अभ्यासरत केसरबाई, गवनई में विद्या धरी बाई के हरावे के सपना देखत भले उनका(मिसिरजी के) प्रति समर्पित लउकत बाड़ी, बाड़ी ना। बनारस के राजा के सामने मिसिरजी के विद्या, ज्ञान आ प्रेम के कीमत कतना बा ई बात जब खुद मिसिरजी के लखार हो गइल त+ उनका पासे बनारस छोड़े के अलावे कवनो अउरी विकल्प बाँचते कहाँ रहे! एगो कलाकार खातिर अपमान मरन के समान होला। मरन माने मुअले ना, मुँह करिखियो लगावल होला। बाकिर देखे जोग बा कि जवन केसरबाई महेन्दर मिसिर के अपमानित करे में इचिको ना हदसली, ओही केसरबाई के दुःख से पघिल के ऊ उनका खातिर नीमन–बाउर हर अधातम कइले।

महेन्दर मिसिर के कलकत्ता प्रवास उनकरा चारित्र के पोढ़ आधार दिहलस। उनका जिनगी में, एक बेर फेर, केसरबाई के आगम भइल, बाकिर दोसरा रूप में– एगो लकवा के मारल रोगिणी, जे काली माई के मंदिर के आगा हाथ पसरले भीख माँगत रहे। पहिले त' ऊ मिसिरजी के देख के पराए के कोशिश कइलस बाकिर देह अबस होखे के वजह से परा ना सकल। मिसिरजी केसरबाई के टाँग के अपना डेरा पर ले अइले। उनकरा फसाना के फलाफल उपन्यासकार के शब्दन में–

''बनारस से राजा साहेब का साथे कलकत्ता आइल रहली केसरबाई। आलीशान कोठी। दरवान, नोकर, दाई, बाबर्ची से भरल रहे कोठी। केसरबाई के बुझाइल जइसे स्वर्ग बा त इहें बा! बड़ा शान–शौकत से आनंद में जिनगी बीतत रहे कि ओह सुख में जहर घोरा गइल। लकवा मार दिहलस केसरबाई के। आ फेर कुछ दवो दारू भइल। बाकिर तब–तक राजा साहेब का कवनो अउर बाई जी भा गइली आ काली जी का आश्रय में केसरबाई भीख माँगे खातिर स्वतन्त्र हो गइली। सुन के महेन्दर मिसिर के मन करुणा से भर गइल। फेर से दवाई के सिलसिला शुरू भइल।''

(फुलसुँघी/तिसरका संस्करण, 2001/भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना– पृ. 72)

भिखारी ठाकुर के बिदेसी कलकत्ता पेट के जरने ना गइल रहले बाकिर घर में गवनहुती मेहरि के छोड़ के गइला के मतलब ई बा कि ऊ तनी बेसिए रंग–रसिया टाइप के आदमी रहे। कलकत्ता में जाके ऊ एगो बाउर मेहरारू(ठाकुरजी जेकरा के रंडी कहत बाड़े) के फेर में पर के ओकरे संगे रहे लागत बाड़े। ओकरा से बालो–बच्चा हो जात बाड़े स।

पाण्डहूँ कपिल के महेन्दर मिसिर पतुरिया के फेर में परल बाड़े आ भिखारियो ठाकुर के बिदेसी पतुरिया के फेर में परल बाड़े, बाकिर महेन्दर मिसिर करुणा से भरल बाड़े जबकि बिदेसी वासना में डूबल बाड़े। दूनों आदमी के जमा–पूँजी स्वाहा हो गइल बाकिर महेन्दर मिसिर जहाँ आत्मतोष आ अहोभाव से भर उठले, ओहिजे बिदेसी आत्म–ग्लानि से। बिदेसी के हाल अइसन होत बा–

बिदेसी : (रो–रो के गावतारे)
का बहाना करब घर जा के?
पातुर के धन चातुर देके आप रोवत पछताके।
बहुत कथा इतिहास सिखावल ना कइलीं बुढ़वा के।
हालत काइ भइल पिया तोरी पुछिहन जब जोरूधाके,
कवन जबाब देहब प्यारी से, मन में रहब सरमा के।
कहत भिखारी भिखार होइ गइलीं दौलत बहुत कमाके।

भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया' के चर्चा के दौरान विद्वान लोग हरमेसा बिदेसी के कलकत्ता गमन के भूख आ बिपत से जोड़ेला। कुछ विशिष्ट जन के त' एकरा में 'गिरमिटिया प्रथा' के प्रतीकांकन तक लउक जाला। साहित्य के ई बहुत बड़ खूबसूरती ह आ आलोचना के अप्रतिम दृष्टि कि रचना में जवन होइबे ना करे, ऊ खोज के सबका सामने धर दे। भोजपुरी साहित्य के मूर्धन्य आलोचक महेश्वर प्रसाद, जे बाद में महेश्वराचार्य नाँव से विख्यात भइले अपना महत्वपूर्ण आलोचना पुस्तक 'जनकवि भिखारी ठाकुर' के शीर्षक 'विरह–वेदना' में अइसने खोज करत लउकत बाड़े–

डॉ ब्रजभूषण मिश्र के कविता में कुछुओ 'घूँघट के पट' में नइखे जेकरा के खोलला से बिहारी मजूरन के फेफरिआइल ओठ आ लोराइल आँख लउकी। एहिजा जवन बा तवन हाथ के नरियर अस ठोस आ साफ–साफ लउकत बा। 'बिहारी मजदूर' माने बिहारी मजदूर, जे कवनो दलाल के भरोसा पर स्टेशन आइल बाड़े स। एहिजा से ऊ ओहिजा जइहें स, जहाँ रोटी के इंतजाम हो सकी भले एकरा खातिर अलेख जलालत सहे परी, अभोग भोग भोगे परी।

(शेष अगिला अंक में)

❑❑

❍ बक्सर,बिहार

नई शिक्षा नीति 2020 में क्षेत्रीय भोजपुरी के प्रासंगिकता

डॉ.संतोष पटेल

भारत जइसन बहुभाषी आ बहुसांस्कृतिक देश में शिक्षा नीति के भाषा संबंधी दृष्टिकोण हमेशा से अत्यंत महत्वपूर्ण रहल बा। नई शिक्षा नीति 2020 (NEP–2020) एह संदर्भ में ऐतिहासिक दस्तावेज मानल जात बा, काहे कि एह में मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषा आ भारतीय भाषाई विविधता के संरक्षण–संवर्धन पर विशेष जोर दिहल गइल बा। नीति के कई अनुच्छेद (विशेषकर भाषा शिक्षा से जुड़ल प्रावधान) ई स्पष्ट करेला कि शुरुआती शिक्षा मातृभाषा/स्थानीय भाषा में होखे से सीखने के प्रक्रिया अधिक प्रभावी बन जाला।

मातृभाषा में शिक्षा : नीति के मूल आधार

नई शिक्षा नीति के अनुच्छेद 4-11 से 4-13 तक विशेष रूप से ई सिफारिश कइल गइल बा कि कम से कम कक्षा 5 (आ संभव होखे त कक्षा 8) तक शि क्षा मातृभाषा, स्थानीय भाषा भा क्षेत्रीय भाषा में दीहल जाव। एह प्रावधान के मूल उद्देश्य बाकृ

*बच्चा के संज्ञानात्मक विकास के बढ़ावा दिहल।

*सीखल विषय के गहराई से समझ विकसित कइल।

*भाषा के कारण होखे वाला मनोवैज्ञानिक दबाव कम कइल।

शोध बतावेला कि जवन बच्चा आपन पहिल शिक्षा मातृभाषा में लेवेला, ओकर तार्किक क्षमता, रचनात्मकता आ अभिव्यक्ति शक्ति अधिक विकसित होला। एह दृष्टि से क्षेत्रीय भाषाएँ अब केवल सांस्कृ तिक पहचान के माध्यम ना रहि के शैक्षिक सशक्तिकरण के औजार बन गइल बाड़ी स।

भारतीय भाषाई विविधता के संरक्षण

नीति के अनुच्छेद 22 में "भारतीय भाषाएँ, कला आ संस्कृति" के संरक्षण पर बल दिहल गइल बा। एह में ई स्पष्ट कइल गइल बा कि भारतीय भाषाएँ ज्ञान–परंपरा के वाहक बाड़ी स, एह से विश्वविद्यालय स्तर तक इनका अध्ययन–अध्यापन के बढ़ावा दिहल जाई।

नीति "इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन (IITI)" जइसन संस्थान स्थापित करे के बात भी कहेला, जेकर उद्देश्य भारतीय भाषाओं में ज्ञान संसाधन उपलब्ध करावल बा। एहसे क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्यपुस्तक, शोध सामग्री आ डिजिटल कंटेंट के विकास होखी।

क्षेत्रीय भाषाओं के शैक्षिक उपयोगिता

क्षेत्रीय भाषाएँ–जइसे तमिल, कन्नड़, बांग्ला, असमिया, मराठी, पंजाबी आदि–पहिले से शिक्षा आ साहित्य के समृद्ध परंपरा रखेली। नई शिक्षा नीति इनका शैक्षिक माध्यम, शोध भाषा आ ज्ञान सृजन के भाषा बनावे के दिशा में प्रोत्साहित करेला।

एहसे तीन महत्वपूर्ण लाभ होखेला:

1. ज्ञान के लोकतंत्रीकरण – अंग्रेजी तक सीमित ज्ञान अब आम जन तक पहुँची।
2. ड्रॉप–आउट दर में कमी – भाषा बाधा कम हो खे से पढ़ाई जारी रखे के संभावना बढ़ेला।
3. स्थानीय ज्ञान परंपरा के पुनर्स्थापन – लोक विज्ञान, कृषि ज्ञान, लोक चिकित्सा आदि के दस्तावेजीकरण संभव होई।

भोजपुरी भाषा के प्रासंगिकता

अब सवाल उठेला कि एह नीति में भोजपुरी जइसन लोकसमृद्ध भाषा के का स्थान बा? भोजपुरी आज करोड़ों लोगन के मातृभाषा ह। भारत के अलावा नेपाल, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना तक एह भाषा के व्यापक उपस्थिति बा।

भोजपुरी के प्रासंगिकता कई स्तर पर समझल जा सकेला–

(क) **मातृभाषाई शिक्षा में भूमिका**

पूर्वी उत्तर प्रदेश, उत्तरी आ पश्चिमी बिहार आ झारखंड के कई इलाकन में बच्चा के पहिल भाषा भोजपुरी होला। अगर प्राथमिक शिक्षा भोजपुरी

सहायक भाषा के रूप में दीहल जाव, त सीखल आसान हो जाई।

(ख) **मौखिक ज्ञान परंपरा**

भोजपुरी में लोककथा, लोकगीत, कहावत, खेती–किसानी ज्ञान, ऋतुचक्र, आयुर्वेदिक परंपराकृ अमूल्य धरोहर बा। शिक्षा में इनका समावेश से पाठ्यक्रम स्थानीय बन सकेला।

(ग) **सांस्कृतिक आत्मगौरव**

जब बच्चा स्कूल में आपन भाषा सुनेला, त ओकर भीतर हीनभावना ना, बल्कि गर्व पैदा होला। ई सांस्कृतिक लोकतंत्र के आधार ह।

5. नई शिक्षा नीति आ भोजपुरी : संभावनाएँ

हालाँकि भोजपुरी अभी संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल नइखे, तबो NEP–2020 के भाषा दृष्टि भोजपुरी खातिर अवसर खोलत बा–

1- स्थानीय भाषा में प्रारंभिक शिक्षा – राज्य सरकार चाहें त भोजपुरी सहायक माध्यम बना सकेली।
2- डिजिटल कंटेंट निर्माण – ई–पाठशाला, दीक्षा प्लेटफॉर्म पर भोजपुरी सामग्री विकसित हो सकेला।
3. अनुवाद परियोजना – विज्ञान, गणित, समाजशास्त्र के किताब भोजपुरी में अनूदित हो सकेली।
4- शिक्षक प्रशिक्षण –द्विभाषिक (हिंदी–भोजपुरी) शिक्षण मॉडल विकसित हो सकेला।

6. **चुनौती**

भोजपुरी के शिक्षा में लागू करे में कुछ व्यावहारिक दिक्कत भी बा–

मानकीकृत व्याकरण आ वर्तनी के अभाव मानल जाला बाकिर बहुत कुछ सुधार हो चुकल बा। विश्वविद्यालय स्तर तक पढ़ाई आ शोध हो रहल बा। पाठ्यपुस्तक के कमी नइखे बाकिर ओकर काम मजबूत टीम करे त इ कमी ठीक हो जाई।

प्रशासनिक मान्यता सीमित/अभिभावकन के अंग्रेजी–केन्द्रित मानसिकता

बाकिर नीति के प्रोत्साहन से एह बाधा के दूर कइल जा सकेला। भाषा मानकीकरण, शब्दकोश निर्माण, अकादमिक शोध–ई सब जरूरी कदम बा आ भोजपुरी में एह पर काम हो रहल बा।

भाषाई न्याय आ समावेशी शिक्षा

नई शिक्षा नीति के मूल दर्शन "समावेशी आ न्यायपूर्ण शिक्षा" बा। जब तक शिक्षा भाषा के कारण दूर रही, तब तक सामाजिक असमानता बनी रही। भोजपुरी, मगही, मैथिली, अवधी, बुंदेली जइसन भाषन के समावेश से शिक्षा सही माने में जनतांत्रिक बन सकेली।

निष्कर्ष

सार रूप में कह सकीलें कि नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाई पुनर्जागरण के दस्तावेज ह। एह में मातृभाषा–आधारित शिक्षा, क्षेत्रीय भाषाओं के संवर्धन आ ज्ञान के भारतीय भाषाओं में उपलब्धता पर जवन जोर दिहल गइल बा, ऊ ऐतिहासिक कदम ह।

भोजपुरी खातिर ई नीति अवसर के नया द्वार खोलतियाकृबशर्ते राज्य, शैक्षिक संस्थान आ समाज मिल के पहल करे। अगर प्राथमिक शिक्षा, लोकसाहित्य, डिजिटल सामग्री आ अनुवाद कार्य में भोजपुरी के स्थान मिल जाव, त ना केवल भाषा बचेगी, बल्कि ज्ञान के दायरा भी व्यापक होई।

एह तरह नई शिक्षा नीति क्षेत्रीय भाषाओं के सम्मान देत–देते भोजपुरी जइसन जनभाषा के शैक्षिक भविष्य के भी मजबूत आधार प्रदान करेला।

❑❑

❍ **द्वारिका, नई दिल्ली**

एक मुठी सरसो बनाम भोजपुरिया

केशव मोहन पाण्डेय

गदराइल गेहूँ के खेत में, भा मसुरी–मटर के अगरात फूलवन के बीचे बा ऊँखि के जामत पुआड़ी के पोंछ पकड़ले भा अकेलहूँ अपना हरिहर देहिं पर पीअर अँचरा लहरावत सरसो अपना रूप–रंग, चाल–ढाल आ रस–गंध से अपना ओर बरबस लोग के मन के मोह लेबे के कूबत राखेला। सरसो के पीअर अँचरा देखत कवि लोग के मन कूदे लागेला। शायर लोग शेर लिखे लागेले आ लेखक लोग बड़ा रचि–रचि के कलम तूरेला। हम जब कबो सरसो के फूलन से पाटल खेत के देखेनीं त देखते रहे के मन करेला। अपना मनहर के मनभर देख के कहाँ कबो केहू के मन भरेला? हमरो मनवा ऊहे करेला। रसिक मन में सरसो के अइसन रूप बन जाना कि सगरो सरेह वन जस हो जाता आ अमीर खुसरो जी के गीत कान में सुनाए लागेला, सनसनाए लागेगा– 'सगन बिन फूल रही सरसो।'

भले कोस–कोस पर पानी बदल जाला त का हऽ, प्रकृति एक्के होले। रीति आ नीति के एक्के भाव होला बाकिर देखे वाला मनई अपना–अपना चश्मा से देखत रहेला। केहू के सरसो के पीअरका फूलवा धरती माई के चुनरी लागेला त केहू के कवनो अल्हड़ लइकी के बेपरवाह दुपट्टा। केहू सरसो के पीअरका फूलवा के हाथ पीअर भइला से जोड़ेला त केहू के पाहुन के विदाई खातिर रंगल धोती के पसारल बुझाला। केहू के पीताम्बरी ओढ़ले अदृश्य पीतांबरधारी विष्णु भगवान बुझाले त केहू के सोना के पानी वाला उमड़त–उफनत नदी बुझाला। केहू के वसंत के अइला के चिन्हा ह सरसो त केहू के ललकार के लहास ह सरसो। ऋषभ देव शर्मा जी लिखले बानी कि –

''सुनो, बगावत कर रहे अब सरसों के खेत
पीली–पीली आग नव जागृति का संकेत''

'चंद्र गहना से लौटती बेर' में गाँव के बहरी, खेत के मेड़ पर बइठल केदारनाथ अग्रवाल जी के सरसो कुछू दोसरे रूप में लउकत बा। ऊहाँ के लागत बा कि सरसो त जइसे सबसे बड़ हो गइल बा। सरसो एतना बड़ हो गइल बा कि ऊ आपन हाथ पीअर करवा लिहले बा आ बिआह के मंडप में बइठ गइल बा। अइसन लागत बा कि होली के गीत गावत फागुन के महीनो ओह बिआह में शामिल हो रहल बा। एह स्वयंवर में प्रकृति अपना नेह के अँचरा डोलावत बा। देखीं –

''और सरसों की न पूछो
हो गयी सबसे सयानी,
हाथ पीले कर लिए हैं
ब्याह मंडप में पधारी
फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे।

देखता हूँ मैं, स्वयंवर हो रहा है
प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है''

कवि चंद्रप्रकाश 'चंद्र' जी सरसो के फूलाइल वसंत के अइला के प्रमाण मानत लिखले बानी–

''पीली–पीली सरसों फूली, अरु बौर अमवा पे छायो ।
हरी–हरी मटर बिछौने ऊपर अमित रंग बरसायो ।
सजि आयो रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।
अजी गाओ रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।।''

राष्ट्रीय चेतना के सजग आ स्वाधीनता संग्राम में अनेक बेर जेल के यातना भोगे वाली हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवयित्री आ लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान जी के लागत बा कि सरसउवे अनंग के मधुरस दिहले बा जवना से वसुधा के अंग–अंग फड़कत बा–

''फूली सरसों ने दिया रंग,
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग,
वधु–वसुधा पुलकित अंग–अंग''

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी 'ग्रामश्री' में सरसो के तेलहवा सुगंध के बड़ा मोहक वर्णन कइले बानी। देखल जाव–

उड़ती भीनी तैलाक्त गंध
फूली सरसों पीली पीली,
लो, हरित धरा से झाँक रही
नीलम की कलि, तीसी नीली!

लेखनी के धनिक लोग एगो दोसरे दृष्टि रखेला। केहू के सरसो अपना पिअरका साड़ी पर खेतन में इतरात लागेले त केहू के बुझाला कि कवनो स्वयंवर रचाइल बा आ ओहमे एक्के जइसन साड़ी पहिन के, एक्क रूप में लाहे–लाहे मुस्की मारत कियारी–कियारी रूपी लाइन बना के सरसो जइसन सुन्दरी ठाढ़ बाड़ी। केहू के लागेला कि मंगल रूप धारण क के सुहागिन लोग

ऋतुराज वसंत के स्वागत करे आइल बा आ केहू के लागेला कि अपना रूप–रंग से धरती माई के रूप के निखार के सरसो मने मन अपना पर अगरा ताड़ी। केहू के लागेला कि प्रकृति ऋतुराज बसंत के देख के सरसो के फूलन से कनखी मारत बा त केहू के लागेला कि गाँव के गोएड़ा बदलत ऋतु के खुश करे खातिर आस्था आ विश्वास में रमल गाँव के औरत लोग फूल–अछत–रोरी–कुमकुम चढ़ा के पूजा कइले बाड़ी। एतने ना, प्रकृति के सुन्दर चित्रकारी करत लगभग सभे सरसो के सुन्दरता के वर्णन कइले बा। 'सरसो' अपना नमवे में सरसता लिहले बा। जहवाँ रस पा, रूप बा, रंग बा, ऊहवाँ सरसता त होखबे करी। जवना तरे अनेक फसलन से भरल खेल के बदला में खाली फूलाइल सरसो अपना ओर मन मोहे के जादू जानेला, ओही तरे मटियो के आपन गुन होला। 'एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत। न सा बकसहस्रेण परितस्तीरवासिना।।' 'सरस' भाव से ई बतिया सरसउओ के तालाब के सुशोभित करत एगो राजहंस जस सिद्ध करत बा।

सरसो के खेती भारतीय किसान खातिर एगो जब्बर लाभकारी खेती हवे। खेती के परंपरागत तौर–तरीका अपनावत बेरा भोजपुरी लोक जीवन में घाघ आ भड्डुरी के कृषि–पंडित कहल जाला। कई बेर त ओह लोग के लोकोक्ति चाणक्य के नीति से ताल ठोंकत लउकेली। घाघ जहाँ खेती, नीति आ रोग–व्याधी खातिर अपना कहावतन से विख्यात हवें उहवें भड्डुरी के कहावतन में बरखा, ज्योतिष आ सामान्य आचार–विचार के बात मिलेला। इनकर मौसम–ज्ञान आ शुभाशुभ विचार अपना नीति आ अनुभव पर आधारित बा। गँवई मन आजुओ ओह लोग के लोकोक्तियन के दोहरा–दोहरा के अपना ज्ञान, बुद्धिमानी आ चालाकी के परिचय देला लोग। घाघ खेत में बीआ बोए के ढेर गुन बतवले बाड़े। खेत में बीआ केतना डालल बढ़िया रही, ओहके मात्रा के बड़ा शुद्धता से व्यौरा देत सरसो बोवे के रास्ता देखावत बाड़ें। घाघ के ई कहनाम बड़ा मसहूर ह कि –

'सवा सेर बीघा, सावां जान। तिल सरसों, अंजुरी परमाण।
कोदो, बरै, सेर बोआओ। डेढ़ सेर बीघा, तीसी नाओ।'

एक बिगहा खेत में सवा सेर सावां, तिल आ सरसों एक–एक अंजुरी, कोदो आ कुसुम एक सेर अउरी तीसी के डेढ़ सेर ले खेत में डाले के चाहीं। एहसे दोगुना उपज के संभावना रहेला।

आजुओ, समय के साथे चलत मनई जब एकइसवीं सदी में आ गइल बा, तबो भोजपुरिया क्षेत्र के असंख्य किसान खेती करत एह बातन के मानेलन। घाघ जी के एक अँजुरी वाला बाति के सामने हम त सरसो खातिर कुछू अउरियो देखले–अनुभव कइले बानी। हमरा विचार से सरसो भोजपुरिया लोग के मनोदशा आ मनोवृत्ति के सथवे कूबत के असली परिचायक हऽ।

ई एकदम निर्विवाद बात बा कि आजु भोजपुरी भाषा सगरो संसार में आपन उपस्थिति दर्ज करा चुकल बा। भोजपुरी से केहू अनचिन्हू नइखे। आज भोजपुरी भाषी लोग में उत्साहो के बढ़ंती भइल बा। गहे–गहे लोग सार्वजनिक अथ.ान पर आपुस में भोजपुरी बोलहूँ लागल बा। अब एकर पढ़ाइयो होखे लागल बा। कमे सही, अब भोजपुरी में पत्रिकन के साथे समाचारपत्रो (भोजपुरी टाइम्स) छपत बा। मामला कुछ मजा लेबे वाला गीतन ले नइखे सिमटल, गाहे–बेगाहे, छोट–बड़, सगरो मंच से सलिल आ अश्लील भोजपुरी के चर्चो में लोग सरीक होत बा।

ई तऽ हमेशा से प्रसिद्ध रहल बा कि भोजपुरी भाव के भाषा हऽ। भोजपुरिया मनई अभ.ाव में केतनो रहें बाकिर भाव में तनिको कमी ना रहेला। जिनगी के हर हाल से ताल ठोंक के भीड़ जाए वाला स्वतंत्रता के चिनगारी पैदा करे वाला मरद मंगल पाण्डेय हऽ त बुढ़उतियो में अपना के कुर्बान करे वाला कुँअर सिंह हऽ। भोजपुरियन में भले केतनो आपसी मतभेद होखे, बाकिर भाषा खातिर अगाध नेह होला। भोजपुरिया घाघ के एक अँजुरी भा एक मुठी सरसो अस देखे में कमे हो के आपन दम देखावे में पाछे ना रहेला।

सरसो के सुभाव में विविधता बा। ओकरा उपयोग में विविधता बा। पत्त के साग, फर के देत–मसाला आ डाँठ के जरावन त सबहरिया होला, अनेक लोग एकरा औधषीय गुन के जानत किसिम–किसिम के उपयोग करेला। जिनगी के धीरज धरे के सीख देबे बदे बेर–बेर बतावल जाला कि तरहत्थी पर सरसो ना जामेला बाकिर शुभचिंतक लोग भगवान से आँखि में सरसो जामत रहे के अरज करेला। लोग जानेला कि सरसो जमावल त बड़ा आसान ह बाकिर सरसो के फूलाइल खुशहाली के चिन्हा हऽ। हमरा लागेला कि सरसो प्रकृति के परोपकारी रूप के आइना हऽ। एकर उपयोग कम से कम भोजपुरिया क्षेत्र के पहिचान हऽ। तेल लगावल आ तेल–तासन कइल मुहावरा भले चमचागिरी खातिर होखे, बाकिर सरसो हमनी के संस्कारन में पुष्ठ करेला। एकर अबटन देहिं के रोग–व्याधी त भगइबे करेला, रंगों निखारेला। बिआह–शादी के अबटन होखे भा जिउतिया के अपना पूरखन के प्रति श्रद्धाभाव से देत खरी–तेल, नजर उतारे खातिर मुड़ी उछरूंगे के होखे भा शनिदेव के मनावे खातिर सरसो–तेल के धार चढ़ावल, ई जनजीवन के हर गाँव में आपन ठाँव बनवले बा।

हमरा नजर में खाली सरसो के बहाने केहू भोजपुरी के आत्मा से परिचित हो सकेला। बात वर्तमान के सबसे चर्चित विषय पर्यावरण के होखे चाहे परब–त्योहार के, बात परिस्थितिजनित इतिहास के तथ्यन से साक्षात्कार करावे के होखे, चाहें संस्कारन के समेटे–सजावे के, सरसउवे के बहाने पाठकगण के ढेर सवाल के जवाब मिल जाई। भोजपुरियन के सुभाव जस सरसो के ढेर पौष्टिक मानल जाला आ एकर तासीर गरम। जाड़ा–पाला में एकरा तेल के उपयोग खइला से ले के लगवला ले होला। एहके तेल के मालिस कइला में मांसपेशी मजबूत होली आ खून के बहाव बेरोक–टोक होला। ई चमड़ा, दिल, पेट आ सुभाव, सबके ठीक राखे के ताकत राखेला।

एह लेखवा के नाँव 'एक मुठी सरसो बनाम भोजपुरिया' एह से कि सरसो भले जंतर–मंतर में मंतर मार के परोरे के काम आव. ला त काऽ, बड़ा शुभ आ सात्विको मानल जाला। जइसे कि पहिलहूँ कहले बानी कि सरसों के अबटन से देहिं के मइल झरि जाला, उछरूंग के जरवला से बाउर नजर उतरि जाला आ मसाला बना के खइला से मन मस्त हो जाला। सरसो के आपन औषधीय गुन होला। तेल खइला के साथे देहिं में लगावहूँ के कामें आवेला। एकरा पतई के उन्नत साग रिन्हाला त डाँठ उत्तम जरावन के काम करेला। सरसो अपना समय के कवनों फसिल (कवनो रवि फसल) के साथे बोआ जाई। कइसनको जमीनो पर छींट दीं, उगि जाई। एह सब के बादो लेख के नाँव 'एक मुठी सरसो...' राखला के सबसे बड़का कारन कुछ अउर बा। हमरा मन के भाव। हमार लइकाईं गंडक के किनारे बितल बा। आजु हमार जनम ध ारती गंडक के गोद में समा चुकल बा बाकिर लइकाईं के बाति ना भुलाला। बाढ़ आ बरसात बितला पर हम देखीं कि माटी ढेर सरस हो जात रहे। रवि के खेती के बेरा कुछ खलार खेतन से पानी उतरते, पाँक के तनी काठ होते, बकला–खेंसारी–मसूरी छिंटा जाव, सथवे ओही में एक मुठी सरसवो मिला दिहल जाव। ना हर–बैल के गरज पड़े आ ना कोड़े–झोरे के झंझट। माटी आ पानी के आपसी सरसता रूपी प्रेम ओह बेरा किसान लोग खातिर आशीष बनि जाव। समय पा के बकला आ सरसो, गेहूँ आ सरसो चाहें खेंसारी–मसूरी आ सरसो के फसिल खूबे लहराए आ बिना कवनो खाद–यूरिया, बिना कवनो डाई–पोटास के लहरत सरसो के डाँठ सबसे ऊपर सीना तान के खड़ा रहे। सरसो अपना गन्हक रंग के फूल में सरस मन के सगरो शूल के मेटा के प्रकृति के कृति बनि के सबके नेह के निमंत्रण भेजही लागे। इहे हाल भोजपुरिया लोग के बा। विषम से विषम परिस्थिति में भेज दीं, ऊ लोग बोरा में कसा के कवनो आफत–बिपत सहत चलि जाई लोग आ अपना कूबत से, अपना उद्यम से सबसे ऊपर सीना तान के खड़ा हो जाई लोग। आ बिना कवनो खाद–यूरिया, बिना कवनो डाई–पोटास के अप. ना पहिचान के झंडा शान से लहरावे लागेले भोजपुरिया। गिरमिटिया के रूप में माटी दे दूर गइल, कुली लाइन्स से जिनगी के कठोरतम रूप में जीअलो त इहे बतावेला। एक मुठी सरसों लेखाँ अनेक खातिर शुभ आ सुखद बनि जाले आ आपन पहिचान बना लेले भोजपुरिया।

हमार लेख कवनो विद्वान के लेख ना हऽ, नाहिए कवनो ज्ञान के गरिमा के प्रमाण हऽ आ ना त कवनो शोध के साधन हऽ। हमार लेख हमरा मन के नम जमीन पर बिना कवनो कोड़–झोर के, बिना कवनो डाई–पोटास के ऊपजल भाव के लहलहात फसिल हऽ। माई के ममतासिक्त दुलार ह तऽ सुरक्षा खातिर बान्हल लवंग–भभूत आ गाँती ह तऽ, कुरूई में भरल सोंह–गरम भूजा ह आ गुन–अवगुन के चिंता से दूर ककहरा के कोठार में संचित करे के बेचौनी हऽ।

अपना माटी–मनई से दूर भइला पर मन में ढेर हिरोह जागेला। मजबूरी में बिछड़ल ममता के मलाल त रहबे करेला बाकिर मिताई के मिठाई जब मिले लागेला त मन के ढेर घाव मरे लागेला। सरसो जइसन सुभाव लिहले भोजपुरिया लोग भले एक्के मुठी होई लोग त का, मिलला पर आपन दुःख–सुख, आपन हाल–बेहाल पर दू–चार टुम गलचाउर क के खुश हो जाई लोग। मजबूरी में घर छोड़ के ट्रेन पकड़ले हम दिल्ली अइला से पहिले करीब पाँच बरीस ले 'संवाद' के संयोजन क चुकल रहनी। हर महिना के दूसरका सनिचर के होखे वाले ओह साहित्यि गोष्ठी के परिणाम आजु देश में आपन पहिचान बनावत बा लोग बाकिर दिल्ली अइला के बाद जइसे हमार लेखनी सूख गइल रहे। धीरे–धीरे भोजपुरिया भाई लोग मिले लागल त समय के साथे कबो रून्हाइल बान्हा तूरी के भाव के बाढ़ चारू ओर सरस क दिहलस।

कवनो आड़ा–तीरछा खेत में एक मुठी सरसो छींट दीं, समय पाके ऊहे एक मुठीया घर भरि देला। सरसो से कबो मुँह मत फेरब। भोजपुरिया से कबो मुँह मत फेरब। सरसो सगरो रोग–व्याधी मेटावेला। स्वाद, सुभाव, स्वास्थ्य, शीलता, शालीनता, संस्कार आ संस्कृति के पहिचान ह सरसो आ भोजपुरिया। रउआ प्रेम दे खाएब, माथा नवाई, पावर देखाएब त उलटा माला जाप क के मंत्र परोरी। एह के रहला से राउर घर भरल रही। एहके सुवास से लछमी जी के बास हो. ई। एह के मान दिहला से राउर सम्मान बढ़ी। खाली साँझा देत रहेब त एकर रूप लहरत सोना से कब लहास बनि जाई, पते ना चली।

❑❑

उत्तम नगर, नई दिल्ली

पिंजरा के पंछी

विद्या शंकर विद्यार्थी

स्थान – सोमेसर के दालान **समय** – गदबेर (सोमेसर कुछ सोचत बाड़न कि एतने में बिरीज आवत बाड़न।)

बिरीज ———काहे सोमेसर तूँ एतना उदास काहे बाड़ऽ?

सोमेसर ——— हम ना जानत रहीं भइया कि जेकरा के हम आपन जानतानी ऊ एक दिन गैर बन जाई।

बिरीज ——— के गैर बन जाई आ केकरा के तूँ आपन जानत रहऽ ?

सोमेसर ——— ऊहे, भतीजवा भइया।

बिरीज ——— सोमेसर, तोहरा ई नइखे मालुम कि जब आपन औलाद ना होला त गैर मुँह फेर लेला। गैर आ कुकुर दुनों एक लेखा होलन, केनिओ कवरा बेसी देखके लातार देलन आ स्वामी चकित रह जालन।

सोमेसर ——— हम त ओकरा के आदमी जानत रहीं, कुकुर ना भइया, आ जवन बसतर अपना के सिआवत रहीं तवने ओकरो के, जवन खाना अपने खात रहीं तवने ओकरो के खिआवत रहीं, फरकाहुत के नजरी से कबो ना तिकलीं, हम ओकरा के।

बिरीज ——— तूँ ना तिकलऽ बाकि ऊ त तिकलस नू, बोलऽ आंय?

सोमेसर ——— हँ भइया तिकलस। एकबेर दसहरा में अपना परिवार के लेके हमरा लागिन शहर आइल, हम ओकर आ ओकरा परिवार के मान – मर्यादा में कवनो कमी ना कइलीं, हमरा बेकत के गोड़ में दरद रहे, ओकरा से कहलीं कि अपना परिवार के दस दिन खातिर छोड़ दे आ तूँ गांवे चल जो, ई हमनी जोरे आ जाई। एतना सुनते ओकर परिवार रोवे लागल। कि हम ना रहब।

बिरीज ——— त फिर आगे का भइल ?

सोमेसर ——— ओकरा परिवार के आँख में लोर लउकल, हमरा बेकत के दुख ना लउकल, भइया। हम ओकरा परिवार के साथे साथे भेज देलीं।

बिरीज ——— भगवान जब औलाद ना देलन त का भगवाने पर भरोसा रखऽ, सबकर नइया उहे पार करेलन।

सोमेसर ——— देलन कइसे ना भइया, एगो बेटी देलन बाकि (फफक के) उहो छीन लिहलन हो। हमार करेजवा करेजवा ना रहल, दरक गइल, ना जाने कवन जिनिगी में कवन गुनाह कइले रहीं, हम। ऊ जदि जीअत रहीत त आज हमरा के बेटा के जगहा धैर्य त दिहीत। लोर पोंछे के हमरा उहे कामे आइत। तोहरा बिस्वास बा नऽ?

बिरीज ——— हँ सोमेसर हँ, हमरा बा बिस्वास, सोमेसर।

सोमेसर ——— कहऽ भइया।

बिरीज ——— हेतना अधीर जन होखऽ मरदे। मानुष में जनम बा तोहार। तेलपेरवा के छल से ज्ञानी आदमी के कपार में दरद ना होला, तू त अपने बुद्धिमान आदमी हवऽ, सार के बेटा आ सार के दीया कबो कामे ना आवेला। ई बात के तूँ गिरह बान्ह ल, कि का कहत रहन बिरीज।

सोमेसर ——— बान्ह लेलीं गिरह, आम के लासा लीलार के टिकुली में कामे आवेला, अब इहे कह के समुझावे के बा अपना के। ऊ आम के लासा ना रहे। पढ़वलीं लिखवलीं कि एक दिन कामे आई, ऊ कामे का आई, सब नेकी धो दिहलस। कर दिहलस गुर माटी।

बिरीज ——— पान में बातासा ना कत्था चलेला आ अइसे ऊ त बतोसो ना रहे, माटी रहे तोहरा खातिर माटी, इहे जान ल । सकेती के दिन में आदमी आकाश देने हाथ उठा के अरज करेला, निरंकारी परमेश्वर के किरिपा हो जाला, धार में बहत नइया के खेवनहार पर आदमी अपना के छोड़ देला, आ पार हो जाला। तूँ त दस गो आदमी में रहे ल। तूं दू – चार दिन ना भेंटा ल त लोग तोहरा के खुद खोजे लागेला।

सोमेसर ——— आ पिंजरा के पंछी सब बीतल बात भुला जाला खुशी में, कि जा कुकुर आपन कवरा तिकऽ।

दूनों लोग गावता ——— कटाए लागल धनवा,
मिसाए लागल धनवा,
धुआए लागल चुल्हवा हमार हो।
आरी आरी हँसुआ, कियारी आरी हँसुआ
गावे लागल जिनिगी मल्हार हो।।

(पर्दा गिरत बा)

❑❑

रामगढ़, झारखंड

नोकरिया जे न करावे...

रत्नेश चंचल

नोकरिया ए रामा जे न करावे
घर छोड़वावे गउआं छोड़ावे
बुढ़िया आजी के पउआं छोड़ावे
जिला जवार लंका अस्सी भुलावे
नोकरिया ए रामा जे न करावे ।

माई के हाथे क लउका के रइता
रहिला के साग क छौंकल सगपइता
सपना भइल बाटे भउरी के बाटी
खोजले ना मिले सजाव दही खांटी
छनुआ बघरूआ से मुंह मोड़वावे
नोकरिया ए रामा जे न करावे ।

हिताई नताई मिताई छोड़वलस
लिखल पढ़ल कविताई छोड़वलस
ओढ़ीला कम्बल रजाई छोड़वलस
भुला गइलीं सुतल उंघाई छोड़वलस
अब न्योता हंकारी के दरद सतावे
नोकरिया ए रामा जे न करावे ।

गंगा के पाट छोड़ सोन नदी तीरे
डेरा में कलछुल चले धीरे धीरे
दिने बनत रोज तरकारी भात बा
एक दिन आंतर दे रोटी बेलात बा
पर दूनों जुआरे बर्तनियां धोवावे
नोकरिया ए रामा जे न करावे ।

❑❑

❍ कैमूर (भभुआ) बिहार

पइचा प पानी

सन्नी भारद्वाज

जेठ भइल अषाढ़, इ बताय देती
तनी पइचा प पानी दीवाय देती।

कह देती बदरा से बीचड़ा झुराता
मटीया में चकता दरारी बुझाता।
बुना बुनी गिर के जियाय देती
तनी पइचा प पानी दीवाय देती।।

का जानी कहवा बा रहिया भुलाइल
देऊवा निमोही काहे बा बिसराइल।
कही के जोगिनिया जगाय देती
तनी पइचा प पानी दीवाय देती।।

बगिया बगइचा आ खेत खलिहानी
जिया जन छछने ले पशुआ परानी।
सभकर अरजी लगवाय देती,
तनी पइचा प पानी दीवाय देती।।

अफड़ता पोखरा नहर नदी झरना
भुखल न तलवा के माई बीया खरना।
कुलहीन के जीनीगी बचाय देती,
तनी पइचा प पानी दीवाय देती।।

जेट भइल अषाढ़, इ बताय देती,
तनी पइचा प पानी दीवाय देती।।

❑❑

❍ कैमूर (भभुआ) बिहार

हमार रामभंजन बाबा

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

बात हमहन से छ पीढ़ी पहिले के ह। बरहुआं के कश्यप गोत्रीय दुबे लोगन के परिवार में दुर्गानन्द दुबे के तीन गो सुपुत्र भइल रहलें। जवना में सभेले बड़ रामभंजन बाबा रहलें। उहाँ से दूनों छोट भाई राम सहाय दुबे आ हंसराज दुबे रहल लोग। तीनों भाई एकदम सोझबग, मयगर आ साधु लेखा सोभाव के रहल। तीनों भाई लोग के लइकई बहुत नीमन से बीतल। तीनों भाई लोग बड़ भइलन। रामभंजन बाबा आ उनुके एगो छोट भाई हंसराज बाबा के बियाहो–दान समय से हो गइल। तीसरका भाई के बियाह ना भइल कि ना कइलें, ठीक से कहल मोसकिल बा। समय से दूनों भाई लोग के बालो–बच्चा हो गइलन। जिनगी गाँव का हिसाब से खुसहाली में बीतत रहल। बाकिर रामभंजन बाबा के बुढ़ौती अपना संगे एगो दुख लेके आइल। उ अपना पैर से चले में लचार हो गइलें। घर–पलिवार के लोगन पर आश्रित हो गइलें। बुढ़ौती अपना संगे कमजोरी त लेइके आवेले। केहु उठावे त उठें भा बइठें भा मर–मैदान क पावें। एकरा चलते उनुकर खटिया हरमेसा दुआरे पर पड़ल रहे। पहिले मरद लोग दुवरहीं रहबो करे।

एक दिन अचके एगो घटना घट गइल। रामभंजन बाबा के घर के लोग ना रहे। बाबा दुआरे पर अकेलहीं रहलें। घर के लोग अपना–अपना काम–धाम के चलते बहरा चल गइल रहल। मेहरारू घर में रहलीं सन। सवकेरहीं गउवें के एगो घर से खाये के नेवता देवे नाऊ आइल रहे, तब दुअरा पर एक–दू लोग रहल। उ नेवता अइसना घर से रहल,जेकरा किहाँ बभनइया के लोग नाही खात–पीयत रहलें, ई हाल अबो जस के तस बा। मने उ घर बिरादरी से निकलुवा निकाल गइल रहल। नउवा के गइला के बाद उ लोग बाबा से कहल कि ओकरा घरे नइखे जायेके। बाबा अपना से जाये में समरथो ना रहलें। बाबा कहलें कि हम कइसे जा सकीले, चल त पवते नइखीं आ तू लोग कतों जाइये रहल बाड़ा। त हमरा उहाँ जाये के सवाले कहाँ से आइल। बातो सही रहल , उहो लोग निफिकिर होके अपना काम पर चल गइल।

फेर जब खाये के जून भइल त नउवा फेरु बोलावा देवे आइल आ बाबा के चले के निहोरा कइलस, उ जाये में आपन दिकत बता के जाये से मना क दीहलें। नउवा से ई जनला का बाद कि बाबा दूअरे पर अकेलहीं हउवें, ओहनी के घर से दू जने अइलें आ बाबा के पवलग्गी कइला के बाद संगे चले के निहोरा कइलें, तबों बाबा जाये से मना क दीहलें। बाकिर उ लोग रेघरियावत– रेघरियावत उनुका के अपना पीठ पर उठा के अपना इहाँ ि खयावे खातिर ले गइल। एह में उ लोग के आपन सोवारथ रहल। अपना घरे बाबा के खइका खिया के फेरु दुअरे चहुंपा गइल।

सझा के बेरा सब लोग जुटल। सब कोई आपन–आपन खटिया बिछा के दिन भर के सु ख्खम–दुख्खम बतियावे लागल। बाबा से लोग रोज का तरे हाल– समाचार पूछलस। तब सोझवा बाबा जइसे कुल्हि बात भइल रहे, बता देहलन। अतना सुनते उहाँ सभे अगिया बैताल हो गइल । अदिमी त अदिमी मेहररुओ कुल्हि भुसुराये लगलीं। सभे उनुका पर चिचिया–चिचिया के आपन गुस्सा दे खावे लागल। बाबा के घर के लोगन क ई ब्योहार ढेर बाउर लागल, काहें से कि उ अपना से त गइल ना रहलें। कहबो कइलें कि तू लोग हमरा पर काहें चिचियात हउवा, हम अपना से त गइल ना रहनी ह। हमरा जइसन कमजोर आ अपंग मनई के केहु बरियाई पीठ पर उठा के ले गइल, त हमार कवन दोस। तू लोग हमरा पर मति चिचिया। एहमे हमार कवनो दोस नइखे। बाकिर उ लोग ना मानल आ बाबा के खूब नीक–नेवर सुनावल ।

बाबा एकरा चलते अपना घर के लोगन से खिसिया गइलन आ खीसे रात खइको ना खइलन आ सभेके धीरावत कहलन, तू लोग हमरा के बेमसरफ में दोसी बतावत हउवा बाकिर एहमें हमार कवनो दोस नइखे। एकरा बादो अगर हमहीं दोसी बानी त हम पश्चाताप करेम। तू लोग काल्हु सुरूज बाबा के उगला पर हमार मुँह ना देखबै, हम मर खप जायेम।

लोग बोलल बन्न त ना कइलस बाकिर भीतरें डेरा जरूर गइल। उनुका खटिया के चारो ओरी आपन– आपन खटिया डाल के राते सब सूत गइल। बाबा के खीसे रात नीन ना आइल आ रात भर खटिया पर करवट बदलत रहि गइलें। जइसहीं सब निभोर होके सूत गइल, बाबा कइसों खटिया पर से उतर के घुसुकत घुसुकत दुअरा के ईनार पर पहुँच गइलन आ ईनरा में कूद गइलन।बूढ़ आ

कमजोर मनई के ओही ईनरा में मउवत हो गइल। घर के लोग जे उनुका खटिया के चारो ओरी अगोर के सूतल रहल, ओह लोगन के जरिकों भनक नाही लगल, कि बाबा कब आ कइसे खटिया से उतरलें आ कब ईनरा में कूद गइलें। अउर त अउर कूदलका के अवाजो ना सुनाइल। भोर भइल, गोरू–बछरून के कोयर–कांटा डाले के बेरा सभे लोग गवें गवें उठल। सभेके के निगाह खाली परल खटिया पर गइल। बाबा उहाँ ना रहलें। बाबा खटिया पर कइसे देखइतें, उ त दुनिया छोड़ के जा चुकल रहलन। घर में जनते कोहराम मच गइल। रोवा–रोहट शुरू हो गइल। अदिमी लोग उनुका के खोजे–हेरे लगलें। ओही लोगन में से एक जना कहलें , अरे मरदे तनि ईनरा में देखा लोग। कहीं ओही में कइसहूँ जा के कूद न गइल होखें। रात जवन कहत रहलें, तवने क के देखा देहलन, हमरा त इहे लागता। लोग ईनार पर चहुंप के ओहमें भीतर झांकल , त का देखता कि बाबा ओही में उतिराइल बाड़न। फेरु उनुका के ईनार से निकालल गइल, बाकि उ जीयत ना रहलें। लोग हाली–हाली उनुका के मनिकणिका ले जाके फूँक–ताप आइल आ उनुकर किरिया करम क दीहलस । टोला मोहल्ला के लोग समझदार रहे आ एक–दोसरा के दुख–सुख के बूझत रहे, नाही त बात बतंगड़ बने में देर कतना लागेला।

समय बीते लागल, ओही बरिस पलिवार के एक जने गयाजी जाये के तइयारी कइलनआ ओझइत आ पंडित लोगन के बोला के अपने पुरबुज लोगन के गया जी बइठावे जाये क काम नाध देहल. । जब पुरबुज लोगन के आह्वान कइल गइल त ओझइत से बाबा गया जाये के मना क दीहले आ ना गइले। उनुका छोड़ के सभे के लोग गयाजी में पि. डदान क के आ गइल। अपना दायाद पटीदार के संगे लोग भागवत सुनल आ सभे के भोज दीहल।

जवना दिने बाबा ओह ईनार में मरि गइलें ओह दिन से लोग ओकर पानी पीयल बन्न क दीहल आ ईनरा के भाठ दीहलस। ओह ईनरा से सटले सोनारन के टोला रहल, जवन अजुवो बा। ओह भठलके ईनरा के बगले से सोनरन के पनारा बहत रहे। जवना के पानी रिस–रिस के ओह ईनरा में जात रहे। एक दिन बाबा लोका सोनार के सपना दे खवलें आ फटकारत बरिजलें कि हम ओही ईनार में बानी आ तहनी के पनारा के पानी ओह में रिस रिस के जात ह। आपन पनारा मति बहावा सन, नाही त तोर नास हो जाई। भोरही लोका सोनार परिवार के सभे बड़–बुजुर्ग लोगन के जुटा के अपने सपना के बात सबके सोझा रखलें बाकि उहो लोग कुछ कह ना पावल। पनारा रोकल संभव ना रहे आ बाबा के सपना में आके कहल त खास रहल। बात आइल गइल हो गइल। कुछ दिन बाद फिरो लोका सोनार के सपना में बाबा अइलें आ कहलें कि पनारा बहावल बन्न कर , ई ना क सकेले त हमार मूरत (पिंडी) बना के हमरा खेत के पीपरे तर हमरा के बइठा दे, नाही त तोर अब नासे होई। अगिला दिन फेर लोका सोनार पुरनिया लोगन के भीरी अइलें आ रात के सपना के बात कहलें । त उहाँ जुटल सभे लोग कहल कि ए लोका ! जइसन बाबा कहत हउवन, उहे कइला में भलाई ह। बाकि लोका सोनार सपरत सपरत फिरो बाति के भुला गइलें । कुछ दिन बाद फिरो बाबा लोका सोनार के सपना में अइलें आ उनका अनिष्ट के बाति कह के चल गइलें। भोरे होत लोका सोनार के दुअरे बान्हल उनुकर एगो भइस आ एगो बरधा खड़े–खड़ा गिरलें आ मर गइलें। हहकारा मचि गइल , मय सोनरान डेरा गइल आ सब लोका सोनार के कोसे लागल। सब उनुका के बाबा के कहलकी बाति बेगर कवनो देरी कइले करेके हुरपेटे लागल। बाबा के परिवार के लोग कहल कि जेतना जलदी हो सके, एह काम के कइले ठीक होई।

अगिला दस–पनरह दिन में लोका सोनार आ उनुकर भाई दूनों जने मिलके गोलवा पहाड़ से पथल, ढोका आ पटिया ढो ढो के ले आइल आ अपने हथहीं बाबा के पिंडी गढ़लस लोग। जब सब कुछ तइयार हो गइल, त बाबा के बतावल जगहा पर गाँव के गोइड़े उनुका खेत में पीपर के पेंड़ रहल, उहवें उनुका चउतरा बना के पिंडी बइठा के प्राण–प्रतिष्ठा बभनइया के लोग मिल के करा दीहलस। ओह दिन के बाद लोका सोनार के गरीबी गवें–गवें दूर होखे लागल आ देखते देखत लोका सोनार, लोका सेठ हो गइलें। लोका सेठ के परिवार के उपर बरम बाबा के किरपा बरसे लाग. ल। लोका सेठ हर बरिस हर फसिल के अन्न के पहिले बरम बाबा के परसाद चढ़वला के बादे खास। उनुका परिवार के लोग अजुवो नई फसल के अन्न बेगर बाबा के भोग लगवले ना खाला। बरम बाबा के किरपा से उनकर परिवारों दिनो दिन आगु बढ़ रहल बा। अब त गवें–गवें पूरा सोनरान बरम बाबा के भगत बनि गइल आ सभे उनुका प्रसाद चढ़वावे लागल। कहल जाला कि बरम बाबा के परसाद बाभन लोग ही खाला, अउर दोसरा के ना खाएके। एह का चलते उ लोग परसाद कवनो बाभन से चढ़वा के बाबा के आशीष ले लेला।

हम जब से होस सभरलीं, बाबूजी इहे बतवलें कि हमनी के बरम बाबा के संतति हईं सन आ उनुकर पूजा कइल हमनी के करतब ह। लइकइयें से हमनी के उनुका में बिसवास बढ़े लागल। अपना परिवार में हमार एगो चाचा बाड़न। 20 बरिस पहिले तक उनुकर पारिवारिक स्थिति ढेर ठीक ना रहल, अचके उनुका के बरम बाबा में सरधा जागल आ उ रोज बरम बाबा के पूजा करे लगलें, बरम बाबा के उनुका पर किरपा भइल आ उ मुंसी से मालिक बन गइलें। बरम बाबा उनुका घ ार भर दीहलें। आजु उहाँ के धन संपदा से भरल पूरल बाड़न। बरम बाबा में उनुका सरधा अजुवो जस के तस बा। अजुवो हप्ता में एक दिन बरम बाबा के पूजा क के परसाद चढ़ावल उनुका दिनचर्या में सामिल बा।

गाँवे के एगो बनिया परिवार में ढेर परेसानी चलत रहे, ओकर कवनो संतान ना बच पावत रहलें। ओहके केहु सलाह दीहल कि तू रामभंजन बरम बाबा के मनौती मान के पूजा कइल शुरू कर , परसादी चढ़ाव आ ओके पंडी जी लोगन के दे दीहे , खइहे मति , तोर दुख दूर हो जाई। परेसान आदिमी के हर सलाह भल लागेले,ओहू के लागल आ उ मनौती मान के बरम बाबा के पूजा करे शुरू कइलस, ओकर बीपत दूर हो गइल। घर परिवार खुसहाल हो गइल। जवन संतान भइल उ अजुवो ओह परिवार के मान बढ़ा रहल बा। उ अदिमी अपना मनौती पूरा कइलस आ बरम बाबा के मंदिर आ बड़ चउतरा बनवा दीहलस।

रामभंजन बरम बाबा से जुड़ल ढेर कथा कहानी बाड़ी सन, जवना में परिवार आ गाँव के लोगन के भलाई सोझा लउकेले। सन् 1990 के आस–पास के बात होखी, ओह घरी हम इंजीनियरिंग के पढ़ाई करत रहनी। हर बेर का तरे बसंत पंचमी पर अखंड रामचरित मानस पाठ ठनाइल रहे। जब घरे अ खंड रामचरित मानस पाठ होखे त संगही बरम बाबा के अथाने उनुकर पूजा आ सत्यनारायन भगवान के कथा जरूर होखे आ बरम बाबा के भोग जरूर लगावल जाव। ओह बरिस कवनो छोट लइका घरे राखल बरम बाबा के परसाद जूठ क दिहलस। हमरे माई के नजर पर गइल, त माई ओह दिन बरम बाबा के अथाने होखे वाला पूजा के रोक दिहलस, काहें से कि दोबारा परसाद तइयार कइल संभव ना रहे। माई सोचलस कि 2–4 दिन बाद परसादी तइयार क के तब बरम बाबा के अथाने पूजा हो जाई आ उनुका भोग लाग जाई, बाकिर माई ई बाति भुला गइल। पनरह बीस दिन बीतल होखी कि एक दिन अचके एगो कुकुर पहिलका तल्ला के रसोईघर में चहुंप गइल आ पथरा में राखल पिसान में मुँह गोत के लउटत बेर माई के देखा गइल। माई धउर के रसोई घर में गइल आ दे खलस कि कुकुर कहीं कुछो अउर नइखे कइले, बस पिसान में मुँह लगा के लउट गइल बा। माई मुड़े हाथ राखि के बइठल आ सोचे लागल कि अइसन त कबों ना भइल रहल ह, तब आज काहें कुकुर रसोई घर में आ गइल। अचके ईयाद परल कि बसंत पंचमी के बरम बाबा के परसाद के भोग ना लागल रहल ह। कहीं ओही के ई संकेत त नइखे। माई दू दिन के भीतरे गोहूँ धो–पीस के परसाद तइयार कइलस आ बरम बाबा के अथाने कथा–पूजा करा के भोग लगवा देहलस। तब से आजु ले फेर कबों कुकुर रसोई घर में नइखे गइल। आ माई तब ले कबों भोराइलो नइखे।

कुछ दिन बाद हमरे छोट भाई के मन में भाव आइल आ उ बरम बाबा के अथान पर मंदिर का भीतर टाइल लगवा दीहले, आजु उनुकर स्थिति आ धन संपदा बरम बाबा के किरपा से दिनो दिन बढ़ रहल बा।

तीन बरिस पहिले पटीदारी के एगो चचेरा भाई आपन नया ब्यवसाय शुरू कइला का बाद बरम बाबा के अथाने कथा सुनलस। मने मन मनौती मनलस कि हमार ब्यवसाय चल जाई त अगिला बरिस हम बरम बाबा के चउतरा पर टाइल लगवा देब। डेढ़ बरिस पहिले उ टाइल लगवा देहलस।

बरम बाबा अपने घर–परिवार के लोगन से जब कवनो सेवा लेवे के बा आ ओही बहाने उनुका पर कवनो किरपा करे के बा त ओकरे मन में भाव जगा देवेलन। ई जानि के लोग चंउक जाला। नवंबर 2020 के बात होखी जब हमार छोटका बेटा अपना बियाह के नेवता चढ़ावे बरम बाबा के अथाने गइलें, पूजा क के आ बाबा के नेवत के आ गइले। इहाँ अइला का बाद हमरा से बरम बाबा के चउतरा पर टाइल लगवला के बारे में पुछलन। हम जानत ना रहनी कि बरम बाबा के अथाने कुछ नया काम भइल बा। हम अगिला दिने बाबूजी से पूछनी, त उ सगरी बात बतवलें। तब हमरा मालूम भइल आ हम छोटका बेटा के बतवनी। फेर उ

देवेन्द्र कुमार राय

हमरा से कहलें कि अब जब गाँवे जाईं त बरम बाबा के चउतरा के चारो ओरी घेरा बंदी करवा के तबे आइब, हम उनुका बात से तुरते सहमत हो गइनी। दिसंबर 2020 में जब हम गाँवे गइनी त एह बाति के जिकिर बाबूजी से कइनी। बाबूजी कहलें, बरम बाबा के इच्छा कुछ अइसने होखी। हम बरम बाबा के अथाने काम शुरू करवनी। देखते देखत ओह काम के दायरा लमहर हो गइल। हमरे एगो चाचाजी कुछ बदलाव आ सहयोग के कहलें आ फिर छोट भाई कुछ अउर बदलाव आ सहयोग के कहलें। सबके कहलका के धियान में राखि के उहाँ निर्माण भइल। अतना निर्माण से बरम बाबा के अथान के सुघरई बहुते बढ़ गइल। अप्रैल 2021 में हमरा के उत्तर प्रदेश सरकार के हिन्दुस्तानी अकादमी, प्रयाग राज से हमरे एगो किताबि 'आखर आखर गीत' के भिखारी ठाकुर भोजपुरी सम्मान के घोषणा भइल आ अगिला दिने चंदौली बनारस आ प्रयागराज के सगरे अखबारन में ई खबर प्रकाशित भइल। गाँव के लोग जब एह खबर के पढ़लस त सहास कह उठल, ई कुल्हि 'रामभंजन बरम बाबा' के सेवा आ उनुके किरपा के फल ह। अइसन हउवन हमार 'रामभंजन बरम बाबा' जे अपना परिवार, गाँव आ समाज के लोगन पर आपन किरपा बरस. ावत रहेलन।

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

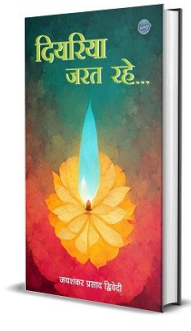

हंसे के बहाना ना मिलल

अइसन दिन एको ना रहले जहिया ताना ना मिलल,
हंसल त चहनी बाकी हंसे के बहाना ना मिलल।

कतनो करीं जतन सोंची तनिका सा मुस्काई द,
बिधना के विध से बनल रस तनीका चिखाइ द,
गावल दूर सुनहूँ के कवनो गाना ना मिलल
हंसल त चहनी बाकी हंसे के बहाना ना मिलल।

लाख करीं चतुराई चाहीं केहू के बिलमाई दीं,
डभकत फोरा जीनीगी के चहनी की उसकाइ दीं,
एकर करीं चिरौरी कंहवाँ अइसन थाना ना मिलल,
हंसल त चहनी बाकी हंसे के बहाना ना मिलल।

चमकत लीलार के तीनो रेखा सभके तरनाइल बा,
जेने देख ओने लउके सभके मुंहवा बघुवाइल बा,
देवेन्दर का करीहे दूर अइसन दवाई के दाना ना मिलल,
हंसल त चहनी बाकी हंसे के बहाना ना मिलल।

❑❑

❍ जमुआँव, पीरो, भोजपुर, बिहार

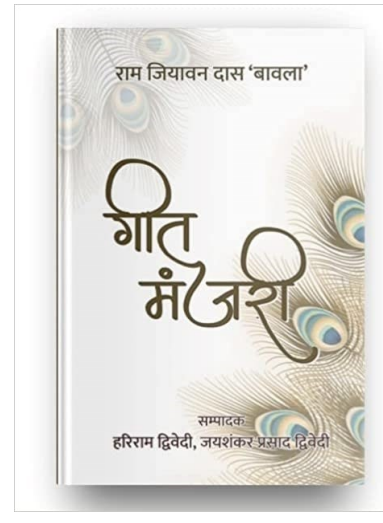

दू गो किसान कविता

कनक किशोर

सपना

लोग दिनों में
सपना देखेला
खुलल आँखिन से
आसमान भर सपना,
हम ना / हम किसान हईं

हमार सपना मेहनत से
जुड़ल रहेला
उहो छोट – मोट
रोटी – कपड़ा – मकान
से जुड़ल
जीवन से जुड़ल

उहो टूट – बिखर जाला
लूटा जाला
वक्त के मार से
गुम हो जाला
भा मऊरा जाला,
आस ना / निरास हाथे लागेला

टूटत – बिखरत
सपनन के बीच
खुद के फिर खड़ा
करे में लागल रहिला
एगो जूनूनी तरे
जीवन पथ पर
हम किसान हईं

हमरा जीवन में
सपना पूरा होखे के
प्रकिया जोर पकड़े के पहिले
बिखर जाला /हमार सपना के ककहरा
के क्रूर सच्चाई इहे ह

हमार सपना
सपने रह जाला
हम किसान हईं

❑❑

किसान आ क्रांति

कविता लिख देवे से
भाषण दे देला से
संघर्ष खातिर /धारणा, प्रदर्शन भा
नारेबाजी करि के
क्रांति ना आई
किसान जीवन में

एह सब से क्रांति के
मुगालता पालेवाला
किसान जीवन में बदलाव के
सोचे वाला लोग
ठग ह /कामचोर ह

क्रांति – क्रांति कह देवे से
रोड पर हल्ला कइला से
संसद में दिखावा कइला से
किसान साथे खइला आ
किसान के गला लगइला से
क्रांति ना आवे /आ इहे सब से आवे के रहित त
कब्बे आ जाइत

क्रांति के माने होला
किसान जीवन में बदलाव
आ बदलाव नजर आई
अंतःक्रांति से /किसान के खुद से जागे से
आपन अधिकार समझे
आ लेवे से

एह खातिर
तनी अपना अंदर धँसके
आपन समस्या सब के
बेपर्दा करे के होई
आ समाधान / निदान खातिर
अनुकुल माहौल
तइयार करे के होई
खुद हाथे।

❑❑

❍ राँची, (झारखंड)

निशान

डॉ रेनू यादव

जइसही रेशमा ललिता के पीठ पर पड़ल हल्का लाल नीला निशान पर बर्फ क थैली रखली वइसही पूरा घर 'आऽऽहऽऽऽ' के चीख से गूँज उठल। गटई, पीठ, पेट अउर जाँघ पर अइसन कई निशान रहल जवने के करिया पड़ले से बचावे क रहल। उ सब निश. ान बर्फ की थैली से छुअइते अउर अधिक जाग उठऽ अउर चाम, नस अउर हड्डी तक टभक टभक के कई अउर निशान छोड़ जा। ललिता कबो किचकिचाके दाँत बाँध ल त कबो आह–ऊँह कहरत के चिल्ला पड़ऽ। न दर्द पर बस रह गइल बा अउर न तन पर। जब मन में अथाह पीड़ा उठे लागऽ तब तन क टीस कम महसूस होखऽ।

बेड के बगल में कुर्सी लगाके बइठल ललिता क अम्मा ललिता के हर चीख के साथ 'आह३ हमार बच्चा'! कहत के कहर उठँऽ जइसे कि रेशमा उनहीं के घाव पर बर्फ छुआवति होखऽ। उ हर बार काँप–काँप उठँऽ अउर आँख पोंछत के अपने दामाद के गरियावत जा, 'पता रहत कि उ एतना हैवान निकलिहें त हम कबहूँ तुहार बियाह ओह हत्यारा से नाहीं करवइतीं। हमसे बहुत बड़हन गलती हो गइल ।... अरे, पहले केतना सीध ाा–सादा लगत रहनऽ अब त आँखिए से हत्यारा लगेनऽ... केतना बदल गइल बाड़े... कुछ समझ में नाहीं आवत बा कि अब का कइल जाऽ?... सोचत बानी कि कल उनके घ ार जाके बात करब... कइसे उ एतना हैवा. नियत पर उतर सकेनऽ?... अरे कवनो गलती भइल होख त दो–चार बात डाँट–बोल के खत्म करँऽ, अइसे कइसे हाथ उठा सकेले हमरी बच्ची पर... '

कमरे से बाहर दीवार के आड़ में बइठल रोहित आँख में आँसू लीहले सब सुनत रहनऽ। ललिता क चीख से उनकर हृदय फाटल जात रहल, हाथ भींच–भींच के उ खुद के नियंत्रित कइले क कोशिश करें, तबो मुट्ठी बंध जाऽ अउर दीवार पर दे मारऽ। अम्मा क बात सुनके उ बोल पड़नऽ, 'अम्मा, आपके कहीं गइले क जरूरत नाहीं बा। हम तलाक क पेपर लेके जाइब'...।

'तलाक'...!

'हँ, ललिता उ दरिन्दे के साथ नाहीं रहिहें, अब नाहीं जाये देब'...

'नाहीं जाये देब! का मतलब ह तुहार?... काहे नाहीं जाई, उ घर ललिता क हउवे!' – अम्मा क तेवर बदल गइल। निशान पर बर्फ अउरी रेशमा क बर्फिला हाथ दोनों एकदम से थम गइल, जइसे उ खुदो जम गइल होखऽ।

'का करिहें अइसने घर में जाके अम्मा... जहाँ शुकूनव न होखऽ?... अउर ललिता क देखभाल खातिर हमहन बानी न'

रेशमा क आँख भर आइल, ओकर हाथ फिर से चलल शुरू हो गइल अउर ललिता क कराहल अबहिन जारी रहल।

'हम बानी!... कइसे?... हमहन खाली साथे खड़ा बानी? इनकर घर उहे हउवे... इनके अपने घर में रहि के आपन अधिकार लेवे के पड़ी।... का तुहके नाहीं पता बा कि एक तलाकशुदा औरत क का हाल होला...? छोड़न के कवनो तारनहार नाहीं...! बिरादरी में नाक कट जाई हमार? समाज में हमहन का मुँह दिखाइब'?

'का अम्मा... तू अबहिन इहे सब सोचत बाडू? जमाना बहुत बदल गइल बा३ अगर हम अपने बहन के देखभाल नाहीं कर सकेनी त हमके पढ़ले–लिखले क अउरी नौकरी कइले क का फायदा'?

ई सुनके रेशमा क आँख से नमक भरभरा आइल अउर ललिता के पीठ पर बह चलल। ललिता चीख पड़ली, 'भाभी३'। रेशमा आँख पोंछत के सिंकाई करे लगली।

अम्मा जी क बोलल जारी रहल, 'हम जाके पूछब न दामाद जी से, कि हमरे बेटी से अइसन का गलती हो गइल बा? (अम्मा के लहजे में तनी नरमी आ गइल) उहवाँ इनकर जगह दिलवावल जायी।... (कवनो गहरी सोच के खाई में उतरत के अम्मा फिर से कहल शुरू कइली) पता नाहीं उनकर माई–दादा कइसन बाड़े कि उनके ई सब दिखाई नाहीं देत बा? बेटा पी पा–के पतोही के मारत रहेला अउरी उ लोग उनके रोकेलन नाहीं!... न जाने उ लोग कइसन संस्कार दीहले बाड़े अपने बेटा के!... एगो हमार बेटा बा कि शराब क त दूर.. . बीड़ी–सिगरेट तक के हाथ नाहीं लगावेला!... आज तक केहू इनके अपने मेहरारू के डाँटत के नाहीं सुनले बा... बहुरिया से कितनाहू बड़हन गलती हो जाला बाकिर कब्बो गुस्सात के नइखी देखले...। एगो हमहन संस्कार दीहले बानी अउर एगो उ लोग...।

रेशमा जोर–जोर से सिसक पड़ली, उ बेड से नीचे धम्म से बइठ गइली। रेशमा क अधीरता अम्मा जी से सहन नाहीं भइल, 'बहुरिया! मत रोवऽ हमार बच्चा। तू बड़ी अच्छी बाडू। तुहसे केहू क दुख देखल नाहीं जाला, फिर ई त तुहार ननद हई।... ललिता के मरहम लगा द, रात में उठके एक बार अउर लगा दीहऽ।...

रात बहुत हो गइल बा... तू जाके सो जा... भला हमहन के कहवाँ नींद आयी...?

जवने सीढ़ी के चढ़ के रेशमा के अपने कमरा में पहुँचले में करीब एक मिनट भी नाहीं लगेला, ओहीं के आज चढ़ले में 10 मिनट से भी अधिक समय लग गइल। उनके पैर में जइसे जाता बंध गइल होखऽ। पीठ, गर्दन अउर कंधा भारी बोझ से पीछे के ओर लुढ़के लागल, उनकर छाती पाकल कटहल जइसन फाटे लागल जेकरे ऊपर उ कई साल से काँटों क कँवच बना रखले बाड़ी। काने में अम्मा जी क आवाज आग बनके पिघले लागल, 'अरे... हमरे बेटा के केहू पावे वाला बा! गऊ हउवँ गऊ! ऊँची आवाज में कबहू बात नाहीं करेला, हाथ कहाँ से उठाई!... जवन दे द चुप–चाप खा लेनऽ... जवन कह द सब कर देनऽ। इनके अंदर कबो कवनो बात क कवनो घमण्ड नाहीं हउवे'३

रेशमा घुटनिया गइली, बड़ी मुश्किल से घुटना के बल चल चलके दरवाजे तक पहूँचली अउरी दरवाजा के भीतर से बंद कर के वहीं घुट्टी मुट्टी मार के बइठ गइली। उनके काने में 'गऊ हउवें गऊ३ हाथ कहवाँ से उठइहें... चुपचाप खा लेनऽ... घमण्ड नाहीं हव' जइसन वाक्य जोर–जोर से गूँजे लागल। कान फाटे लागल, उ कान के अपने हाथ से दबा के ओही जा लेट गइली। आँख से नदी बह चलल अउर हृदय में कवनो हुँकारत के बवंडर उठ खड़ा भइल।

जब अंदर क बवंडर थोड़ थमे लागल, अँखयन से नदी क धारा शांत होखे लागल तब उ देखली कि पूरा कमरा में पहले से ही एक अउर बवंडर आके गुजर चुकल बा। रोहित क कपड़ा पूरे कमरे में बिखरल बा, जवने के उ शाम में बड़े प्यार से तह कइके रखले रहली हई। काँच क टूटल–बिखरल ग्लास अउर फूलदान गुजरल बवंडर क उ निशान हव जवन अक्सर परिवार पर कवनो बवंडर अइले के बाद इ कमरा में गुजरेला। किताब क फाटल पन्ना रोहित क उ फाटल दिल के निशान हव जवन रेशमा के शरीर पर नाहीं बलुक मन पर पड़ेला।

उ एक एक कपड़ा के समेटत बिछौना तक पहुँच गइली। उ सब कपड़ा पर सलवट के निशान के बड़ धियान से देखऽ जवने के छोड़ावे खातिर उनके फेर से इस्त्री करे के पड़ी। बरिसन से स्थिर कँटइला कटहल के कँवच के भीतरि से उनकर दिल क कोइयाँ बिहला बिहला के बहरे निकले लागल। उ रोहित क शर्ट एह उमेद से पहिर लेहली कि शायद बिहलात दिल के कवनो असरा मिल जाऽ। बाकिर शर्ट पहिरले के बाद उ अउरो बेचौन हो गइली। उ काँच के उठावे लग. ली अउरी दिल के एक एक कोइयाँ के ओही काँच से उठा–उठा के कूड़ेदान में फेंके लगली।

पसीजत कोइयाँ बिखरल पन्नो के पसीजा देला। उ रेत बन गइली, बिखरे लगली, तड़पे लगली। रोहित क शर्ट खुद रोहित बन गइल, उ उनके काठ जइसन मजबूत सीने से लिपट गइली। रोहित क काठ जइसन मजबूत सीना पिघले लागल। पिघलत–पिघलत उ समुद्र बन के रेत के चादर के ढंक लीहलस, थाम लीहलस, बिखरले से रोक लीहलस। समुद्र–तल के शांत रेत पर ठहरल हरा शैवाल के बीच हजार–हजार मछरी बिछलत बाड़ी कवनो कोने के चाह में, मचल गइली जीयले के चाह में। समुद्र अपने लहरन के थपकी में मछरियन के सुलावे लागल, मछरियाँ उ हल्के हाथ के थपकियन से आँख बंद क के कवनो सुनहरे सपना में खो गइली, 'आप हमके छोड़ के अब कबों नाहीं जाइब३ कबों नाहीं३। अइसहूँ केहू नाराज होला का?... अब आप कबों नाराज मत होखब...'

'नाराज' शब्द अचानक से कवनो चट्टान से टकरा गइल, सब मछरी ठहर गइली, समुद्र काठ जइसन जम गइल। बुदबुदात होठ से लहू क धार फूट पड़ल, 'लहू...! कहाँ से आइल ई लहू'?

घबरा गइली रेशमा। उ जल्दी–जल्दी शर्ट के उतार फेंकली। सारा कपड़ा तह करके रखे लगली अउरी कपड़ा के साथ खुदो के, 'सचमुच कबों नाहीं मारेनऽ३ कबों नाहीं डँटलऽ।... न प्यार समझ में आइल अउर ना रिसियाइल! सबसे छुपावल आसान हव बाकिर खुद से छुपावल मुश्किल... सब कुछ भइला का बादो खाली काहें बानी?... काहें उ जरत सूरज बन जानऽ अउर हम धधकत रेत? सूरज कबों खुद धरती पर आके रेत के आग में नाहीं झोंकेन, उ घना अंधेरा अउरी अंधड़ में अकेल छोड़के बेगर कुछ कहले सिर्फ आपन आँख तरेर के चल जानऽ, जेकरे सुबह क कवनो भरोसा नाहीं। ओह समय घर में कवनो काँच नाहीं टूटेला सिर्फ उम्मीद टूटेला, हम टूटेनी... अउर उ टूटन के साथ ई प्रश्न अउरो गहरा जाला कि आखिर हमार गलती का ह? एगो अइसन प्रश्न जवने क जवाब कबों नाहीं मिली सिवाय घना अंधेरा के अंधड़ में झकझोर दिहले के अलावा...। महिना–महिना तक उनकर खामोशी क सड़ाँध जीवन में एतना पसर जाला कि रिश्ता के दुबारा शुरूआत मवाद में लिपटल फोड़ा जइसन टभकेला। उ फोड़ा ठीक नाहीं भइल कि दूसरका फिर से निकल आवेला। घर आ कि ऑफिस कतों कवनो परेशानी रहऽ, उ घर आके फोड़ा के ऊँगली से दबा दँऽ अउर फेर से खामोशी क लिबास पहिर के कतों दूर चल जाँऽ। मवाद फिर से फच–फचाके जीवन में पसर जाला अउर हम देखत रह जानी। आश्चर्य क बात ई ह कि ई मवाद सिर्फ हमके देखाई देला केहू अउरी के नाहीं। एह मवाद से हमार अस्तित्व चिपक गइल बा जवने के चाहियो के हम छुड़ा नाहीं पावत बानी'।

एतना में फोन क घंटी बज गइल अउर उ चिहुँक के फोन उठा लिहली अउर भराइल गला से बोल पड़ली, 'हँ अम्मा'

डॉ. सुमन सिंह

❍ सहायक आचार्य
हिंदी विभाग
मुकुलारण्यम् महाविद्यालय, सिगरा ,वाराणसी

के ह बीखुआ ?

'ठीक बानी अम्मा' रेशमा अपने चेहरा क उजाड़ के देखत के शीशा के समने आ गइली।
'आवाज से ठीक नाहीं लगत बाडू'?
'अम्मा... '
'बोलऽ बेटा... कुछ कहल चाहत बाडू'?
'का हम कुछ दिन खातिर आपके पास आके रह सकेनी'? लम्बी खामोशी के बाद रेशमा कहली।
'हँ हुँ३ का भइल? ३ कुछ भइल बा का उहवाँ?... (खामोशी) केहू कुछ कहले ह तुहके३. (खामोशी)... सब ठीक बा ना'?
'नाहीं... कुछ नाहीं'३ रेशमा फोन काट दिहली। बेगर जवाब दीहले माई–दादा अपने पास नाहीं रख सकेनऽ।
रेशमा फेर से अपने जिनगी के उजाड़ के देखे लगली जवने के उ मँहगा गहना अउर कपड़ा से ढंक दीहले बाड़ी। इहे नाहीं उ बनावटी बात 'सब ठीक ह' से ढंक के रखले बाड़ी। उनके गहना के पीछे चमकत झुर्री अंधड़ में झकझोर दीहल गइले क गवाह ह। जिनगी क उजाड़ उनके लिपस्टिक के आड़ में पपड़ियाइल होठन अउर बारिस के बाद सुन्न पड़ल आँख में साफ दिखाई देवे लागल। पियराइल नाखून के धार से अपने हथेली क चितकबरी रेखा के नोचे लगली। चारों ओर छावल खामोसी अउर अंदर उठल बवंडर से चीख के उ अपने साड़ी के पल्लू गिरा दीहली। बिल्कुल सीसा जइसन साफ पारदर्शी दिखे लग. ली रेशमा। उ अपने चेहरा, गला, पेट पर हाथ फेरली अउर सब कुछ साफ सुथरा पवली, 'कास!३हमहूँ ललिता जइसन भागके मायके जा पवतीं...! जवन सोचत बानी, समझत बानी, जवन सिर्फ हमके दे खाई देत बा उ शब्द में बयाँ कर पवतीं... ! बाकिर हमरे सरीर पर कतों कवनो निसान... ?

❑❑

❍ नोएडा (उ०प्र०)

गुरुआइन के सोझा आवे से बचे खातिर ही परताप तीन बार कुंडी खटखटावे क तरकीब रचले रहलन।शिवशंकर भइया भी उनके एह तरकीब के सफल बनावे आ भेद रखे में साझीदार रहलन बाकिर आज उनके गैरहाजिरी में जवन गम्भीराह साया से पाला पड़ल कि परताप के संगे–संगे मनोज भी सोकता गइलन।एक ओरी अपने गुरू से मिले क मनोज क बरिसन क सरधा आ दूसरे ओरी गुरुआइन क अइसन परचंड उत्पात कि कहले न कहाय,सहले ना सहाय।परताप के एक ओरी घसीटत मनोज फुसफुसइलन –'' भइया ! चला इहँवा से।जदि जियत जिनगी रही त फिरो गुरुजी से मुलाकात हो. ई।''
परताप मनोज के हरान–परेसान देख के ठठा के हँस दिह. लन।पेट पकड़ के हँसत–हाँफत पुछलन – '' का बेट्टा बस हो गइल ? एतने देर में परेसान हो गइले।बाबा बिसनाथ क दरसन तू करबे त उनके पलटन क दरसन के करी ? अबहीं ले त उनके पलटन क एक्के गो चेला से तोहार भेंट भइल ह बाकी कुल्ह त एनो–ओने ताक में हउवन के कब मनोजऊ भेंटाय आ कब उनकर आवभगत होखे।'' मनोज के भइया क हँसी–ठट्ठा सोहात ना रहल।उनके डर सतावत रहल कि फिरो गुरुआइन घेर लिहन आ कपार खाए लगिहन।ऐसे पहिले कि गुरुआइन अपने कमरा में से बहरे आवें, मनोज घर से बहरियाय जाइल चाहत रहलन।अबहीं ऊ भइया क बाँह भर जोर घिसिरावत दरवाजे तक अइलन कि एगो बीस –बाइस साल के लइका से टकरा गइलन।टक्कर तनी जोरदार रहल।मनोज के केहुनी क करारा वार लइका के पेट में लगल रहल बाकिर ऊ चिखलस–चिल्लइलस ना बस दर्द से सिहरा गइल।लइका आपन दर्द छुपावत इसारे में पुछलस – '' के हउवा लोग ? कहंवा से आइल हउवा ? केसे मिले के ह ? '' परताप बुझि गइलन कि जरूर ई बिखुवा ह।
पुछलन – '' के ? बीखु ? ''
बीखुआ परताप के हिलत होठ ओरी धियान से देखत हाथ से मुँह आ कान छू के इशारा कइलस जवने क मतलब रहल कि ऊ सुन–बोल ना पावेला।बीखुआ उनहन लोग के इशारे में अंदर चल के बइठे के कहलस आ इहो कि ' गुरुजी' अवते हउवन।अधिक से अधिक दस–पनरह मिनट में आ जइहन।' परताप कुल्ह इशारा के ध्यान से समझ बूझ के मनोज ओरी दे खलन।वइसे त पिछले कई घंटे क गुरुआइन क उधम – उत्पात मनोज के कुल उछाह पर पानी फेर देले रहल पर बात

बस दस –पनरह मिनट क अउरी रहल आ अब त बीखुआ क भी आड़–छाँह रहल।मनोज मान गइलन आ परताप क बाँह पकड़ले फिरो बैठका में आके बिराजमान हो गइलन।इनहन लोग के बइठले के कुछे देर बाद बीखुआ चाय – नाश्ता ले आइल। मनोज आ परताप जइसहीं अपने सुखाइल कंठ में पानी उतरलन कि गुरुआइन धमक अइलीं आ अवते दाँत पीस के बीखुआ ओरी देख के भारी कंठ से धमकावे लगलीं – '' अरे हरे ! हम काहीला न कि जब केहू मर – मेहमान घरे आवें त उनके कुछ देर छहाएं –सुस्ताए देवल कइल.ीं।के अवते तरास जाला कि पानी मिठाई लेके ध ाऊर आवेले ? आयं।निस्तनिया ! पापी ! अपने त चल जाला दिसा–देसाटन करे आ इहवाँ भांति – भांति क कुल जवाल– बवाल हमरे हिस्सा मढ़ जाला। के हउवा तोहन लोग ? कहंवा से आइल हउवा लोग ? आयं ?'' बीखुआ ओरी देख के ई लोग बेचारगी से गुरुआइन ओरी तकलन।मनोज परताप के कान ओरी मुँह लिआके फुसफुसइलन – '' ए भइया ! ई त कुल भुला गइलीं।अब का होई ? हे भगवान ! फिर से ...।''

परताप जल्दी से गोड़ छू के फिर से कहे शुरू कइलन बाकिर सतर्कता साथ रहल – '' जी, हमार दोस्त मनोज मिले आइल रहलन ह गुरुजी से।बीखु बतावत रहलन ह कि ऊ दस –पनरह मिनट में आ जइहन।का आप ...।'' अबहीं परताप आपन वाक्य पूरा भी ना क पवले रहलन कि गुरुआइन करेड़े कहलीं – '' कवन बीखु रे ? के बीखु ह इहँवा।एह घर में त एगो ऊ मुँह फूँकना रहेला एगो ई।'' बीखु ओरी इसारा रहल बाकिर उनकर नाम बीखु ना रहल त का रहल ? परताप क माथा चकरा गइल – '' त ई बीखु ना हउवन ?''

'' ई पपिया कइसे बीखुआ बन गइल ? '' गुरुआइन तमक के कहलीं।

'' त के बीखुआ ह ? '' एना पारी मनोज पूछ भइलन।

'' हम का जानी ? के ह ?'' गुरुआइन मनोज के कच्चा चबा जाए वाला अंदाज में घुरलीं।

'' आपे न कहले रहलीं ह कि बीखुआ, गुरुजी आ आप तीन जन एह घर में रहीला ?'' मनोज रुआँसा हो गइल रहलन।

'' त का हम झूठ कहले रहलीं ह ?'' गुरुआइन ढक ध लेले रहलीं।

'' नाहीं। हमहन क कहनाम रहल ह कि ई जवन बालक चाह–नास्ता रख गइलन ह, का इहे बीखु हउवन कि केहू दोसर ह ?'' परताप बात के सइहार –सहेज कहलन।

'' हम कब कहलीं ह कि केहू दोसर बीखु ह ?'' गुरुआइन दाँत पीसत कहलीं।

'' त इहे बीखु हउवन न ?'' मनोज सकपकात पुछलन।

'' केवन बीखुआ रे ? के ह बीखु ?'' गुरुआइन दाँत किटकिटावत कहलीं। परताप मनोज के आँखि के इसारा से बोले खातिर बरजलन आ ओह लइका ओरी देखलन जवन कि एह कुल कलह–कुचर्चा से अनजान आँगन में पसारल गेहूँ बटोरे में दत्तचित्त लगल रहे। ओकरे गूंग–बहिर भइले पर परताप भगवान के सौ–सौ धन्यवाद देत गुरुआइन से पीछा छोड़ावत उठ भइलन कि भले गुरुजी से भेंट मुलाकात न होवे बाकिर अब इहवाँ एक्को छन ना रुके के ह। अबहीं गुरुआइन के प्रणाम करे खातिर हाथ जोड़लहीं रहलन कि ऊ गोहरवलीं – अरे हरे बीखुआ !तनी ओ पपिया के घटवा पर देख के आव त कि मुर्दा फूँके गइल ह कि अपने फुंकाएँ गइल ह ।''

❑❑

क्रमशः

❍ **वाराणसी (उ0 प्र0)**

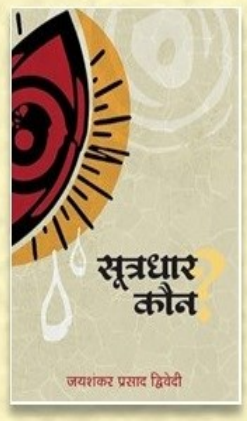

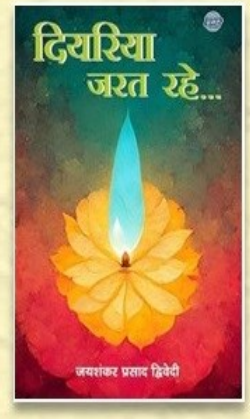

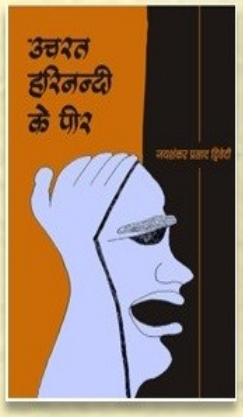

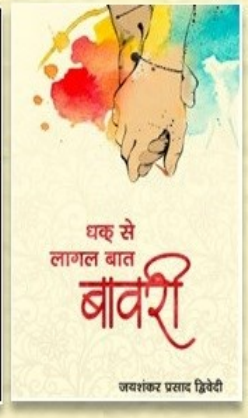

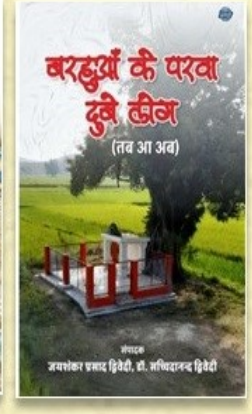

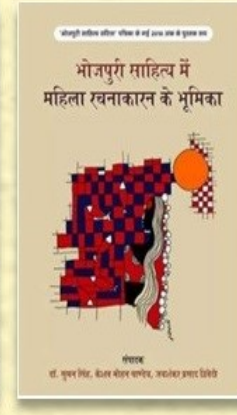

KBS AIR & GAS

KBS Air & Gas Engineering

SALE & SERVICE

* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.

Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India
E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com
MOB. : +91-7042608107, 8010108288

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

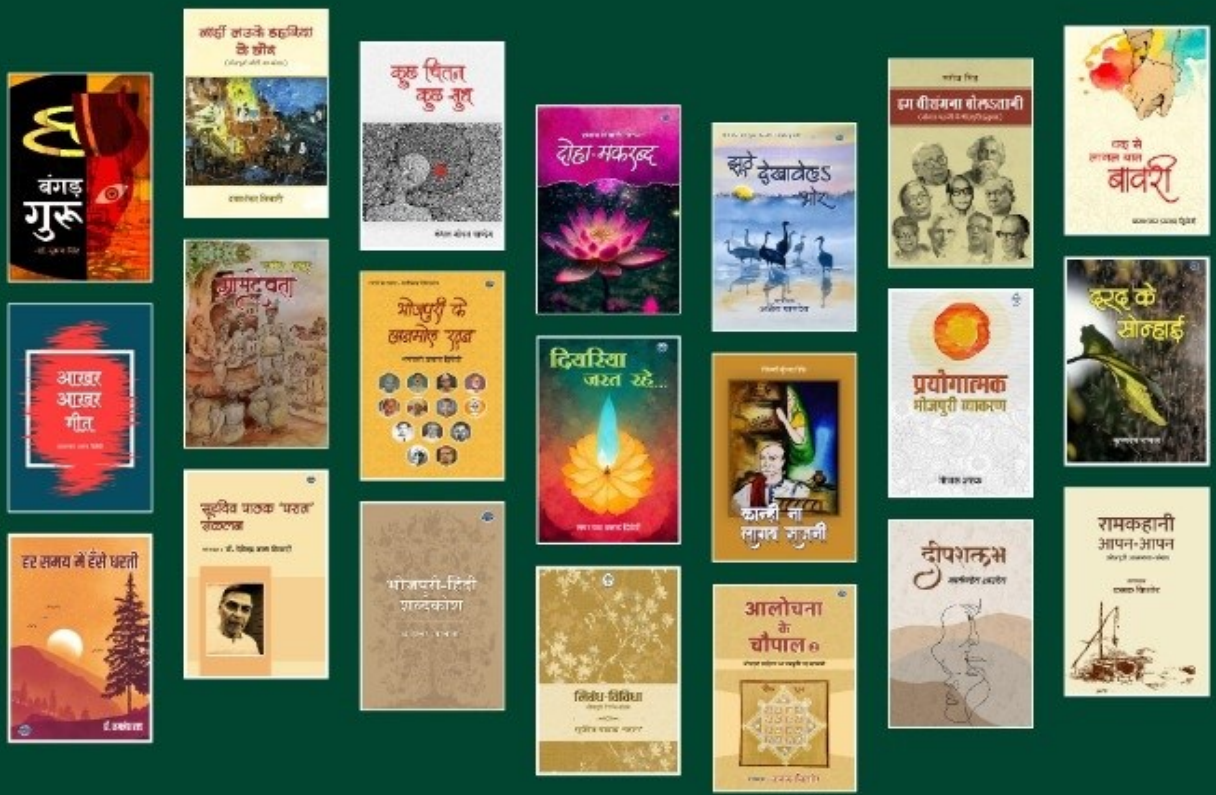

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

लाइक आ सब्सक्राइब करी आ

भोजपुरी साहित्य : रचना-आलोचना

से जुड़ी

@RachanaAalochana